

$$\left[\begin{array}{l} \text{विशेषार्थ - अनुकृष्टि गच्छ } २११ \\ \text{ऊर्ध्वचय} \div \text{अनुकृष्टि गच्छ} = \text{अनुकृष्टि चय} \\ \equiv ७ \\ २१११।२१११।१ \div २११ = \equiv ७ \\ २१११।२१११।१।२११ \end{array} \right]$$

पुनश्च एक कम गच्छ का आधा ऐसा $\frac{१}{२} ११$, इसको चय से तथा गच्छ से गुणा

करनेपर चयधन ऐसा होता है $\equiv ७।२११।२११$ । यहां दो बार संख्यात
 $२१११।२१११।१।२११।२$

गुणित आवली को भाज्य और भागहार में समान देखकर अपवर्तन करनेपर ऐसा हुआ

$$\equiv ७।२११ \\ २१११।२१११।१।२$$

$$\left[\begin{array}{l} \text{विशेषार्थ - चयधन} = \frac{\text{एक कम गच्छ} \times \text{चय} \times \text{गच्छ}}{२} \\ \frac{१}{२} ११ \times \equiv ७ \times २११ = \equiv ७।२११ \\ २१११।२१११।१।२११ \end{array} \right]$$

इस चयधन को प्रथम समय संबंधी परिणाम पुंज ऐसा $\equiv ७।२१११।१।२$ उसमें
 $२१११।२१११।१।२$

से घटाना । सो यहां ऋणराशि के गुणकार के ऊपर एक कमरूप ऋण का ऋण
 ऐसा $\equiv ७$ उसको जुदा रखकर अवशेष ऋण ऐसा
 $२१११।२१११।१।२$

$\equiv ७।२११$ । सो धनराशि और इस राशि में ऐसा $\equiv ७।२११$
 $२१११।२१११।१।२$

आदिधन ÷ अनुकृष्टि गच्छ = प्रथम समय संबंधी प्रथम खण्ड

$$\begin{array}{r} २ \\ \hline १ \quad ० \\ \hline १ \quad ० \\ \hline \equiv ७।२११११।१।२ \\ २११११।२११११।१।२।२११ \end{array}$$

]

इसमें अनुकृष्टि चय मिलाना (प्रथम खण्ड + अनुकृष्टि चय = द्वितीय खण्ड) सो अन्य भागहार समान जानकर दो से समच्छेदन किया हुआ अनुकृष्टि चय ऐसा हुआ

$$\begin{array}{r} \equiv ७।२ \\ २११११।२११११।२११११।२ \end{array}$$

। सो दोनों के भागहार सहित असंख्यात लोक की

समानता देखकर आगे के गुणकार में जोड़ने । इसलिये जहां दो अधिक की संदृष्टि थी, वहां चार अधिक की संदृष्टि करनेपर द्वितीय खण्ड के प्रमाण की संदृष्टि ऐसी

$$\begin{array}{r} ४ \\ \hline १ \quad ० \\ \hline १ \quad ० \\ \hline \equiv ७।२११११।१।२ \\ २११११।२११११।१।२१११।२ \end{array}$$

[विशेषार्थ - प्रथम खण्ड + अनुकृष्टि चय = द्वितीय खण्ड

$$\begin{array}{r} २ \\ \hline १ \quad ० \\ \hline १ \quad ० \\ \hline \equiv ७।२११११।१।२ \\ २११११।२११११।१।२१११।२ \end{array} + \begin{array}{r} \equiv ७।२ \\ २११११।२११११।१।२१११।२ \end{array}$$

$$\begin{array}{r} ४ \\ \hline १ \quad ० \\ \hline १ \quad ० \\ \hline = \equiv ७।२११११।१।२ \\ २११११।२११११।१।२१११।२ \end{array}$$

]

ऐसे ही आगे भी असंख्यात लोक के आगे गुणकार के ऊपर दो दो अधिक

की संदृष्टि करनेपर एक एक चय अधिक होता है । सो एक एक चय अधिक होनेपर तृतीयादि खण्ड होते हैं। प्रथम खण्ड में एक कम गच्छमात्र चय मिलनेपर अंतिम खण्ड

होता है, सो एक कम गच्छ से गुणित अनुकृष्टि चय ऐसा $\equiv \frac{9}{2} १२ ११$ ।
 $२ ११ ११ । २ ११ ११ । १ । २ ११ ११$

सो प्रथम खण्ड के और इसके अन्य हार समान है । इसलिये असमान हार दो से समच्छेद

करनेपर ऐसा होता है - $\equiv \frac{9}{2} १२ ११ । २$ । इसको प्रथम खण्ड का
 $२ ११ ११ । २ ११ ११ । १ । २ ११ ११ । २$

$\frac{२}{\frac{9}{2} १२ ११ । २}$
 प्रमाण ऐसा - $\equiv \frac{9}{2} १२ ११ ११ । १ । २$ उसमें मिलाना । सो मिलाने योग्य धनराशि
 $२ ११ ११ । २ ११ ११ । १ । २ ११ ११ । २$

में असंख्यात लोक के आगे गुणकार में एक कम है और आगे दो का गुणकार है। सो अपने भागहार सहित असंख्यात लोक दोगुणा प्रमाण यह ऋण हुआ और मूलराशि में असंख्यात लोक के आगे गुणकार में दो अधिक थे सो इन दोनों का समान प्रमाण देखकर अपवर्तन किया तब धनराशि ऐसी हुयी

$\equiv \frac{9}{2} १२ ११ । २$ और मूलराशि ऐसी हुयी उसकी संदृष्टि
 $२ ११ ११ । २ ११ ११ । १ । २ ११ ११ । २$

$\frac{9}{2} १२ ११ । २$
 $\equiv \frac{9}{2} १२ ११ ११ । १ । २$ इन दोनों में असंख्यात लोक और दो बार संख्यात
 $२ ११ ११ । २ ११ ११ । १ । २ ११ ११ । २$

गुणित आवली की समानता देखकर आगे धनराशि में जो दो का गुणकार था उसमें मूलराशि में जो आगे गुणकारों के ऊपर एक कम था उसे दूर करके, अवशेष एक को उन गुणकारों के ऊपर अधिक करनेपर अंतिम खण्ड के प्रमाण

$\frac{9}{2} १२ ११ । २$
 $\equiv \frac{9}{2} १२ ११ ११ । १ । २$
 की संदृष्टि ऐसी होती है - $२ ११ ११ । २ ११ ११ । १ । २ ११ ११ । २$

[विशेषार्थ - प्रथमखण्ड + (अनुकृष्टिचय X १ कम अनुकृष्टिगच्छ) = अंतिम खण्ड

$$\begin{array}{r}
 \frac{2}{9 \text{ न}} \\
 \frac{9 \text{ न}}{9 \text{ न}} \\
 \equiv ३।२१११।१।२ \quad + \equiv ३।२१११।२ \\
 २१११।२१११।२१११।२ \quad २१११।२१११।२१११।२ \\
 \text{मूलराशि} \quad + \quad \text{धनराशि} \quad - \quad \text{ऋणराशि} \\
 \frac{2}{9 \text{ न}} \\
 \frac{9 \text{ न}}{9 \text{ न}} \\
 \equiv ३।२१११।१।२ \quad + \equiv ३।२१११।२ \quad - \equiv ३।२ \\
 २१११।२१११।२१११।२ \quad २१११।२१११।२१११।२ \quad २१११।२१११।२१११।२
 \end{array}$$

मूलराशि में से ऋणराशि बाद करनेपर (दो अधिक की संदृष्टि निकल गयी)

$$\begin{array}{r}
 \frac{9 \text{ न}}{9 \text{ न}} \\
 \equiv ३।२१११।१।२ \quad + \equiv ३।२१११।२ \\
 २१११।२१११।२१११।२ \quad २१११।२१११।२१११।२
 \end{array}$$

$$\begin{array}{r}
 \frac{9}{9 \text{ न}} \\
 \equiv ३।२१११।१।२ \\
 २१११।२१११।२१११।२
 \end{array}$$

अंतिम खण्ड

इसमें से दो से समच्छेद किया हुआ अनुकृष्टि चय घटाना, सो असंख्यात के आगे गुणकारों के ऊपर दो कम की संदृष्टि करनेपर उपांत खण्ड की संदृष्टि ऐसी -

$$\begin{array}{r}
 \frac{2 \text{ न}}{9} \\
 \frac{9}{9 \text{ न}} \\
 \equiv ३।२१११।१।२ \\
 २१११।२१११।२१११।२
 \end{array}$$

होती है ।

[विशेषार्थ - अंतिम खण्ड - चय = उपांत खण्ड

$$\begin{array}{r} \frac{9}{9\ 0} \\ \equiv ॐ २ गृ गृ गृ । गृ । २ \\ २ गृ गृ गृ । २ गृ गृ गृ । २ गृ गृ गृ । २ \end{array} - \begin{array}{r} \equiv ॐ २ \\ २ गृ गृ गृ । २ गृ गृ गृ । २ गृ गृ गृ । २ \end{array} \quad (\text{समच्छेद करनेपर चय})$$

$$\begin{array}{r} \frac{2\ 0}{9} \\ \frac{9}{9\ 0} \\ \equiv ॐ २ गृ गृ गृ । गृ । २ \\ २ गृ गृ गृ । २ गृ गृ गृ । २ गृ गृ गृ । २ \end{array}$$

]

पुनश्च जो प्रथम समय संबंधी द्वितीय खण्ड की संदृष्टि है वही द्वितीय समय

$$\begin{array}{r} \frac{8}{9\ 0} \\ \frac{9}{9\ 0} \\ \text{संबंधी प्रथम अनुकृष्टि खण्ड की संदृष्टि ऐसी} \equiv ॐ २ गृ गृ गृ । गृ । २ \quad \text{जाननी ।} \\ २ गृ गृ गृ । २ गृ गृ गृ । गृ । २ गृ गृ । २ \end{array}$$

$$\begin{array}{r} \frac{3}{9\ 0} \\ \text{क्योंकि द्वितीय समय संबंधी परिणाम पुंज ऐसा} \equiv ॐ २ गृ गृ गृ । गृ । २ \quad \text{उसमें से} \\ २ गृ गृ गृ । २ गृ गृ गृ । गृ । २ \end{array}$$

$$\begin{array}{r} \frac{9\ 0}{9\ 0} \\ \text{चयधन ऐसा} \equiv ॐ २ गृ गृ \\ २ गृ गृ गृ । २ गृ गृ गृ । गृ । २ \end{array} \quad \text{घटाना । वहां ऋण के ऋण को धन करनेपर}$$

$$\begin{array}{r} \frac{8}{9\ 0} \\ \frac{9}{9\ 0} \\ \text{अवशेष प्रमाण ऐसा हुआ} \equiv ॐ २ गृ गृ गृ । गृ । २ \quad \text{उसको अनुकृष्टि गच्छ ऐसा} \\ २ गृ गृ गृ । २ गृ गृ गृ । गृ । २ \end{array}$$

[विशेषार्थ - द्वितीय समय संबंधी परिणाम पुंज - चयधन = आदिधन]

मूलराशि में ऋण का ऋण धन होता है उसे मिलानेपर -

$$\begin{array}{r} 8 \\ \hline 9 \ 0 \\ \hline 9 \ 0 \end{array} \quad \text{आदिधन}$$

$$\equiv ३२११११११२$$

$$२१११११२१११११२$$

आदिधनः अनुकृष्टि गच्छ = द्वितीय समय संबंधी प्रथम खण्ड

[illegible]

इसमें दो से समच्छेद किया हुआ अनुकृष्टि चय मिलाना, सो असंख्यात लोक के आगे गुणकारों के ऊपर चार की जगह छह की अधिकता करनेपर द्वितीय खण्ड

$$\begin{array}{r} ६ \\ \hline १ \quad ० \\ \hline १ \quad ० \end{array}$$

की संदृष्टि ऐसी $\equiv$ ७।२१११।१।२
२१११।२१११।१।२।२११

[विशेषार्थ - प्रथम खण्ड + अनुकृष्टि चय = द्वितीय खण्ड

$$\begin{array}{r} ४ \\ \hline १ \quad ० \\ \hline १ \quad ० \end{array} \quad + \quad \begin{array}{r} ७।२ \\ २१११।२१११।१।२११।२ \end{array} \quad (समच्छेद करनेपर चय)$$

$$\begin{array}{r} ६ \\ \hline १ \quad ० \\ \hline १ \quad ० \end{array} \quad \cdot \quad]$$

$\equiv$ ७।२१११।१।२
२१११।२१११।२१११।२

इसीप्रकार एक एक खण्ड में एक एक चय बढ़ाते हुये अंत में एक कम गच्छ

$$\begin{array}{r} २ \\ \hline १ \\ \hline १ \quad ० \end{array}$$

प्रमाण चय मिलनेपर द्वितीय समय संबंधी अंतिम खण्ड ऐसा- $\equiv$ ७।२१११।१।२
२१११।२१११।१।२११।२

[विशेषार्थ - द्वितीय समय का प्रथमखण्ड + एक कम अनुकृष्टि गच्छ से गुणित चय
= द्वितीय समय का अंतिम खण्ड

४

१

८

१

८

३१२११११११२

२११११२११११२११११२

४

१

८

१

८

३१२११११११२

३१२१११२

३१२

२११११२११११२११११२

२१११२११११२११११२

२

१

८

१

८

३१२११११११२

३१२१११२

२११११२११११२११११२

२

१

८

१

८

३१२११११११२

२११११२११११२११११२

द्वितीय समय का अंतिम खण्ड

यहां प्रथम समय संबंधी अंतिम खण्ड में दो से समच्छेद किया हुआ एक चय मिलाने के लिये असंख्यात लोक के आगे गुणकार के ऊपर दो अधिक की संदृष्टि जाननी।

पुनश्च इसमें से एक चय घटानेपर प्रथम समय संबंधी अंतिम खण्ड के समान

१

१

८

३१२११११११२

२११११२१११११२११११२

द्वितीय समय संबंधी उपांत खण्ड की संदृष्टि ऐसी जाननी

ऐसे ही समय समय प्रति खण्डों की रचना होनेपर अंतिम समय में समस्त परिणाम पुंज

ऐसा जानना $\equiv \frac{9}{9} \frac{0}{0} \frac{1}{1} \frac{2}{2} \frac{3}{3} \frac{4}{4} \frac{5}{5} \frac{6}{6} \frac{7}{7} \frac{8}{8} \frac{9}{9}$ इसमें से अपवर्तन किया हुआ अनुकृष्टि चयधन
 $2 \frac{0}{0} \frac{1}{1} \frac{2}{2} \frac{3}{3} \frac{4}{4} \frac{5}{5} \frac{6}{6} \frac{7}{7} \frac{8}{8} \frac{9}{9}$

ऐसा $\equiv \frac{9}{9} \frac{0}{0} \frac{1}{1} \frac{2}{2} \frac{3}{3} \frac{4}{4} \frac{5}{5} \frac{6}{6} \frac{7}{7} \frac{8}{8} \frac{9}{9}$ घटाना । सो ऋण के ऋण को राशि का धन करके
 $2 \frac{0}{0} \frac{1}{1} \frac{2}{2} \frac{3}{3} \frac{4}{4} \frac{5}{5} \frac{6}{6} \frac{7}{7} \frac{8}{8} \frac{9}{9}$

राशि में असंख्यात लोक के आगे गुणकार के ऊपर एक कम था उसको दूर करना
 तथा अवशेष $\equiv \frac{9}{9} \frac{0}{0} \frac{1}{1} \frac{2}{2} \frac{3}{3} \frac{4}{4} \frac{5}{5} \frac{6}{6} \frac{7}{7} \frac{8}{8} \frac{9}{9}$ प्रमाण दोनों जगह समान देखकर राशि में इसके आगे

गुणकार ऐसा $\frac{9}{9} \frac{0}{0} \frac{1}{1} \frac{2}{2} \frac{3}{3} \frac{4}{4} \frac{5}{5} \frac{6}{6} \frac{7}{7} \frac{8}{8} \frac{9}{9}$ उसके ऊपर एक कम करनेपर (अंतिम समय संबंधी आदिधन
 आयेगा इसको अनुकृष्टि गच्छ से भाग देनेपर) अंतिम समय संबंधी प्रथम खण्ड ऐसा

जानना $\equiv \frac{9}{9} \frac{0}{0} \frac{1}{1} \frac{2}{2} \frac{3}{3} \frac{4}{4} \frac{5}{5} \frac{6}{6} \frac{7}{7} \frac{8}{8} \frac{9}{9}$
 $2 \frac{0}{0} \frac{1}{1} \frac{2}{2} \frac{3}{3} \frac{4}{4} \frac{5}{5} \frac{6}{6} \frac{7}{7} \frac{8}{8} \frac{9}{9}$

[विशेषार्थ - अंतिम समय का परिणाम पुंज - चयधन = आदिधन

$\frac{9}{9} \frac{0}{0} \frac{1}{1} \frac{2}{2} \frac{3}{3} \frac{4}{4} \frac{5}{5} \frac{6}{6} \frac{7}{7} \frac{8}{8} \frac{9}{9}$ - $\frac{9}{9} \frac{0}{0} \frac{1}{1} \frac{2}{2} \frac{3}{3} \frac{4}{4} \frac{5}{5} \frac{6}{6} \frac{7}{7} \frac{8}{8} \frac{9}{9}$
 $2 \frac{0}{0} \frac{1}{1} \frac{2}{2} \frac{3}{3} \frac{4}{4} \frac{5}{5} \frac{6}{6} \frac{7}{7} \frac{8}{8} \frac{9}{9}$ $2 \frac{0}{0} \frac{1}{1} \frac{2}{2} \frac{3}{3} \frac{4}{4} \frac{5}{5} \frac{6}{6} \frac{7}{7} \frac{8}{8} \frac{9}{9}$
 $\frac{9}{9} \frac{0}{0} \frac{1}{1} \frac{2}{2} \frac{3}{3} \frac{4}{4} \frac{5}{5} \frac{6}{6} \frac{7}{7} \frac{8}{8} \frac{9}{9}$ - $\frac{9}{9} \frac{0}{0} \frac{1}{1} \frac{2}{2} \frac{3}{3} \frac{4}{4} \frac{5}{5} \frac{6}{6} \frac{7}{7} \frac{8}{8} \frac{9}{9}$ $\mp \frac{9}{9} \frac{0}{0} \frac{1}{1} \frac{2}{2} \frac{3}{3} \frac{4}{4} \frac{5}{5} \frac{6}{6} \frac{7}{7} \frac{8}{8} \frac{9}{9}$
 $\frac{9}{9} \frac{0}{0} \frac{1}{1} \frac{2}{2} \frac{3}{3} \frac{4}{4} \frac{5}{5} \frac{6}{6} \frac{7}{7} \frac{8}{8} \frac{9}{9}$ - $\frac{9}{9} \frac{0}{0} \frac{1}{1} \frac{2}{2} \frac{3}{3} \frac{4}{4} \frac{5}{5} \frac{6}{6} \frac{7}{7} \frac{8}{8} \frac{9}{9}$
 $2 \frac{0}{0} \frac{1}{1} \frac{2}{2} \frac{3}{3} \frac{4}{4} \frac{5}{5} \frac{6}{6} \frac{7}{7} \frac{8}{8} \frac{9}{9}$ $2 \frac{0}{0} \frac{1}{1} \frac{2}{2} \frac{3}{3} \frac{4}{4} \frac{5}{5} \frac{6}{6} \frac{7}{7} \frac{8}{8} \frac{9}{9}$
 $\frac{9}{9} \frac{0}{0} \frac{1}{1} \frac{2}{2} \frac{3}{3} \frac{4}{4} \frac{5}{5} \frac{6}{6} \frac{7}{7} \frac{8}{8} \frac{9}{9}$ आदिधन ।
 $\frac{9}{9} \frac{0}{0} \frac{1}{1} \frac{2}{2} \frac{3}{3} \frac{4}{4} \frac{5}{5} \frac{6}{6} \frac{7}{7} \frac{8}{8} \frac{9}{9}$
 $2 \frac{0}{0} \frac{1}{1} \frac{2}{2} \frac{3}{3} \frac{4}{4} \frac{5}{5} \frac{6}{6} \frac{7}{7} \frac{8}{8} \frac{9}{9}$

आदिधन $\div$ गच्छ = प्रथम खण्ड । गच्छ = २११

$$\begin{array}{r} १ \ ० \\ १ \overline{) } \\ १ \\ \hline ० \end{array}$$

इसलिये प्रथम खण्ड ऐसा $\equiv$ ०।२११११।१।२
२११११।२११११।१।२११।२

]

इसमें दो से समच्छेद किया हुआ अनुकृष्टि चय मिलाने के लिये असंख्यात लोक के आगे गुणकार के ऊपर दो अधिक की संदृष्टि करनेपर उसके दूसरे खण्ड का प्रमाण

$$\begin{array}{r} २ \\ १ \ ० \\ १ \overline{) } \\ १ \\ \hline ० \end{array}$$

ऐसा होता है - $\equiv$ ०।२११११।१।२
२११११।२११११।१।२११।२

[विशेषार्थ - अंतिम समय का प्रथम खण्ड + चय = द्वितीय खण्ड

$$\begin{array}{r} १ \ ० \\ १ \overline{) } \\ १ \\ \hline ० \end{array} + \begin{array}{r} ० \ २ \\ २ \overline{) } \\ ४ \\ \hline ० \end{array} \quad (समच्छेद)$$

$\equiv$ ०।२११११।१।२
२११११।२११११।२११११।२

$$\begin{array}{r} २ \\ १ \ ० \\ १ \overline{) } \\ १ \\ \hline ० \end{array}$$

$\equiv$ ०।२११११।१।२
२११११।२११११।२११११।२

]

ऐसे ही क्रम होनेपर दो से समच्छेद किया हुआ एक कम गच्छ प्रमाण अनुकृष्टि

चय ऐसा $\equiv$ १।१११।२
२११११।२११११।१।२११।२

उसको प्रथम खण्ड में मिलाना । सो यहां

धनराशि का ऋण ऐसा $\equiv ७।२$ उसको जुदा रखनेपर अवशेष
 $२१११।२१११।१।२११।२$

ऐसा $\equiv ७।२११।२$ उनमें ऐसा $\equiv ७।२११$ को दोनों जगह
 $२१११।२१११।१।२११।२$

समान देखकर, इसके आगे राशि में गुणकार के ऊपर जहां एक कम था, वहां धनराशि का दो मिलानेपर एक का अधिकपना करना और ऋणरूप दो जुदे रखे थे उनको घटाने को असंख्यात लोक के आगे गुणकारों के ऊपर दो कम की संदृष्टि करनी। ऐसे करनेपर अंतिम समय संबंधी अंतिम खण्ड के प्रमाण की संदृष्टि ऐसी -

$$\begin{array}{r} २ \quad ० \\ \hline १ \\ \hline १ \end{array}$$

$$\equiv ७।२१११।१।२ \quad |$$

$$२१११।२१११।२१११।२$$

[विशेषार्थ - प्रथमखण्ड + एक कम गच्छ गुणित चय = अंतिम खण्ड
 (समच्छेद करनेपर)

$$\begin{array}{r} १ \quad ० \\ \hline १ \end{array} \quad + \quad \begin{array}{r} १ \quad ० \\ \hline १ \end{array}$$

$$\equiv ७।२१११।१।२ \quad + \quad \equiv ७।२११।२$$

$$२१११।२१११।२१११।२ \quad २१११।२१११।२१११।२$$

$$\begin{array}{r} १ \quad ० \\ \hline १ \end{array} \quad + \quad \equiv ७।२११।२ \quad - \quad \equiv ७।२$$

$$\equiv ७।२१११।१।२ \quad + \quad \equiv ७।२११।२ \quad - \quad \equiv ७।२$$

$$२१११।२१११।२१११।२ \quad २१११।२१११।२१११।२ \quad २१११।२१११।२१११।२$$

$$\begin{array}{r} २ \quad ० \\ \hline १ \quad ० \\ \hline १ \end{array}$$

$$\equiv ७।२१११।१।२ \quad + \quad \equiv ७।२११।२$$

$$२१११।२१११।२१११।२ \quad २१११।२१११।२१११।२$$

$$\begin{array}{r} २ \quad ० \\ \hline १ \\ \hline १ \end{array}$$

$$\equiv ७।२१११।१।२$$

$$२१११।२१११।२१११।२$$

]

इसमें दो से समच्छेद किया हुआ एक चय घटाने के लिये असंख्यात लोक के आगे गुणकार के ऊपर जहां दो कम की संदृष्टि थी, वहां चार कम की संदृष्टि

$$\begin{array}{r} ४ \quad ० \\ \hline १ \\ \hline १ \end{array}$$

करनेपर अंतिम समय संबंधी उपांत खण्ड की संदृष्टि ऐसी होती है $\equiv ७।२१११।१।२$ ।
 $२१११।२१११।१।२११।२$

[विशेषार्थ - अंतिम खण्ड - चय = उपांत खण्ड

$$\begin{array}{r} २ \quad ० \\ \hline १ \\ \hline १ \end{array}$$

$\equiv ७।२१११।१।२$ - $\equiv ७।२$
 $२१११।२१११।२१११।२$ $२१११।२१११।२१११।२$

$$\begin{array}{r} ४ \quad ० \\ \hline १ \\ \hline १ \end{array}$$

$\equiv ७।२१११।१।२$
 $२१११।२१११।२१११।२$

]

पुनश्च अंतिम समय के प्रथम खण्ड की संदृष्टि में दो से समच्छेद किया हुआ एक अनुकृष्टि चय घटाने के लिये असंख्यात लोक के आगे गुणकार के ऊपर दो कम की संदृष्टि करनेपर उपांत समय संबंधी प्रथम खण्ड की संदृष्टि ऐसी होती है

$$\begin{array}{r} २ \quad ० \\ \hline १ \quad ० \\ \hline १ \end{array}$$

$\equiv ७।२१११।१।२$
 $२१११।२१११।१।२।२११$

[विशेषार्थ - अंतिम समय का प्रथम खण्ड - चय = उपांत समय का प्रथम खण्ड

$$\begin{array}{r} \frac{१०}{१} \\ \equiv ३।२१११।१।२ \\ २१११।२१११।२१११।२ \end{array} - \begin{array}{r} \equiv ३।२ \\ २१११।२१११।२१११।२ \end{array}$$

$$\begin{array}{r} \frac{२०}{\frac{१०}{१}} \\ \equiv ३।२१११।१।२ \\ २१११।२१११।२१११।२ \end{array}$$

पुनश्च इसमें दो से समच्छेद किया हुआ अनुकृष्टि चय मिलाने के लिये असंख्यात लोक के आगे गुणकार के ऊपर दो कम किये थे, सो न करनेपर उपांत समय के

$$\begin{array}{r} \frac{१०}{१} \\ \equiv ३।२१११।१।२ \\ २१११।२१११।१।२।२१११ \end{array}$$

[विशेषार्थ - उपांत समय का प्रथम खण्ड + चय = उपांत समय का द्वितीय खण्ड

$$\begin{array}{r} \frac{२०}{\frac{१०}{१}} \\ \equiv ३।२१११।१।२ \\ २१११।२१११।२१११।२ \end{array} + \begin{array}{r} \equiv ३।२ \\ २१११।२१११।२१११।२ \end{array}$$

$$= \begin{array}{r} \frac{१०}{१} \\ \equiv ३।२१११।१।२ \\ २१११।२१११।२१११।२ \end{array}$$

ऐसे खण्ड खण्ड प्रति करते हुये दो से समच्छेद किये हुये एक कम गच्छ प्रमाण चय प्रथम खण्ड में जोड़नेपर, अंतिम खण्ड की संदृष्टि अंतिम समय के उपांत खण्ड

$$\begin{array}{r} ४ \quad ० \\ \hline १ \\ \hline १ \\ \hline १ \end{array}$$

की संदृष्टि के समान ऐसी होती है $\equiv ३।२११११।२$
 $२११११।२११११।२११११।२$

[विशेषार्थ - उपांत समय का प्रथमखण्ड + एक कम गच्छ प्रमाण चय
 = उपांत समय का अंतिम खण्ड

$$\begin{array}{r} २ \quad ० \\ \hline १ \quad ० \\ \hline १ \end{array}$$

$$\equiv ३।२११११।२ \quad + \quad \begin{array}{r} १ \quad ० \\ \hline १ \end{array} \equiv ३।२११११।२$$

$$२११११।२११११।२११११।२ \quad २११११।२११११।२११११।२$$

$$\begin{array}{r} २ \quad ० \\ \hline १ \quad ० \\ \hline १ \end{array}$$

$$\equiv ३।२११११।२ \quad + \quad \equiv ३।२११११।२ \quad - \quad \equiv ३।२$$

$$२११११।२११११।२११११।२ \quad २११११।२११११।२११११।२ \quad २११११।२११११।२११११।२$$

ऋणराशि घटानेपर -

$$\begin{array}{r} ४ \quad ० \\ \hline १ \quad ० \\ \hline १ \end{array}$$

$$\equiv ३।२११११।२ \quad + \quad \equiv ३।२११११।२$$

$$२११११।२११११।२११११।२ \quad २११११।२११११।२११११।२$$

$$\begin{array}{r} ४ \quad ० \\ \hline १ \\ \hline १ \end{array}$$

$$\equiv ३।२११११।२$$

$$२११११।२११११।२११११।२$$

]

इसमें से दो से समच्छेद किया हुआ एक चय घटाने के लिये असंख्यात लोक के आगे गुणकार के ऊपर चार की जगह छह घटानेपर उपांत समय संबंधी उपांत

$$\begin{array}{r} ६ \quad \cap \\ \hline १ \\ \hline १ \\ \hline \end{array}$$

खण्ड की संदृष्टि ऐसी होती है $\equiv ७।२११११।१।२$ ।
 $२११११।२११११।२११११।२$

[विशेषार्थ - उपांत समय का अंतिम खण्ड - चय = उपांत समय का उपांत खण्ड

$$\begin{array}{r} ४ \quad \cap \\ \hline १ \\ \hline १ \\ \hline \end{array}$$

$\equiv ७।२११११।१।२$ - $\equiv ७।२$
 $२११११।२११११।२११११।२$ - $२११११।२११११।२११११।२$

$$\begin{array}{r} ६ \quad \cap \\ \hline १ \\ \hline १ \\ \hline \end{array}$$

= $\equiv ७।२११११।१।२$ ।
 $२११११।२११११।२११११।२$

]

इसप्रकार समय समय संबंधी परिणाम पुंज की और उनके खण्डों की संदृष्टि अधःकरण में जाननी । इनका जो यंत्र है उनमें प्रथम समय संबंधी जघन्य (प्रथम)

$$\begin{array}{r} २ \\ \hline १ \quad \cap \\ \hline १ \quad \cap \\ \hline \end{array}$$

अनुकृष्टि खण्ड के परिणाम ऐसे $\equiv ७।२११११।१।२$ ।
 $२११११।२११११।२११११।२$

इनका अपवर्तन करनेपर संख्यात प्रतरांगुल ४१ से भाजित असंख्यात लोक मात्र होता है उनकी संदृष्टि ऐसी $\equiv ७$ । पुनश्च एक अधिक सूच्यंगुल का असंख्यातवां भाग ४१

ऐसा $\frac{9}{2}$ उसको तीन बार मांडनेपर उसका घन होता है और दो बार मांडनेपर वर्ग होता है । ऐसे घन और वर्ग का परस्पर गुणन करने के लिये पांच बार आगे आगे लिखते हैं $\frac{9}{2} \frac{9}{2} \frac{9}{2} \frac{9}{2} \frac{9}{2}$ । सो इतने स्थानों में एक बार षट्स्थान होता है, तो इतने $\equiv 9$ परिणामों में कितनी बार होगा, ऐसा त्रैराशिक करनेपर लब्धराशि ऐसी $\equiv 9$ $\frac{9}{2} \frac{9}{2} \frac{9}{2} \frac{9}{2} \frac{9}{2}$ होती है । ऐसे ही अन्य खण्डों में जानना । इसप्रकार अधःकरण में संदृष्टि कही।

अपूर्वकरण में अंकसंदृष्टि द्वारा समस्त परिणाम धन चार हजार छानवे ४०९६, कालप्रमाण गच्छ आठ ८, संख्यात की संदृष्टि ४ जानकर, गच्छ आठ ८ का वर्ग $८ \times ८ = ६४$ और संख्यात ४ का भाग सर्वद्रव्य को देनेपर ४०९६ लब्धराशि मात्र $\frac{४०९६}{८ \times ८}$

चय १६ होता है । पुनश्च एक कम गच्छ का आधा $\frac{१}{२}$ को चय १६ और

गच्छ ८ से गुणा करनेपर $\frac{१}{२} \times १६ \times ८$ चयधन ४४८ होता है । इसको सर्वधन ४०९६ में से घटाकर अवशेष ३६४८ को गच्छ का भाग देनेपर $३६४८ = [४५६]$ लब्धराशिमात्र प्रथम समय संबंधी संख्या होती है। इसमें एक एक चय मिलनेपर द्वितीयादि समय संबंधी संख्या होती है, ऐसे ही एक कम गच्छमात्र चय १६ $\times \frac{१}{२}$ मिलनेपर अंतिम समय संबंधी संख्या होती है।

[विशेषार्थ - अपूर्वकरण अंकसंदृष्टि -

सर्वपरिणाम ४०९६, गच्छ ८ (समय), संख्यात ४,

$$\therefore \text{चय} = \frac{४०९६}{८ \times ८} = १६$$

$$\text{चयधन} = \frac{\text{एक कम गच्छ}}{२} \times \text{चय} \times \text{गच्छ}; \quad \frac{७}{२} \times १६ \times ८ = ४४८$$

$$\text{सर्वधन} - \text{चयधन} = \text{आदिधन}; ४०९६ - ४४८ = ३६४८$$

$$\text{आदिधन} \div \text{गच्छ} = \text{प्रथम समय संबंधी परिणाम संख्या} \frac{३६४८}{८} = ४५६$$

$$\text{प्रथम समय संबंधी संख्या} + \text{चय} = \text{द्वितीय समय संबंधी संख्या}$$

$$४५६ + १६ = ४७२$$

$$\text{एक कम गच्छ प्रमाण चय मिलानेपर } ४५६ + (१६ \times ७) = ४५६ + ११२ = ५६८ \quad]$$

इसीप्रकार अर्थसंदृष्टि द्वारा समस्त परिणाम धन असंख्यातलोक से गुणित असंख्यातलोक मात्र ऐसा $\equiv ७ \equiv ७$ । गच्छ दो बार संख्यात गुणित आवली प्रमाण अपूर्वकरण का कालमात्र ऐसा २११, पुनश्च संख्यात ऐसा १। सो गच्छ २११ के वर्ग २११।२११ और संख्यात १ का सर्वद्रव्य $\equiv ७ \equiv ७$ को भाग देनेपर चय ऐसा $\equiv ७ \equiv ७$ ।
२११।२११।१

पुनश्च एक कम गच्छ के आधे $\frac{१}{२} \frac{१}{११}$ को चय $\equiv ७ \equiv ७$ से तथा गच्छ
२११।२११।१

२११ से गुणित करनेपर चयधन ऐसा $\equiv ७ \equiv ७ \frac{१}{२} \frac{१}{११}$ २११ होता है । यहां
२११।२११।१।२

दो बार संख्यात गुणित आवली को भाज्य और भागहार में समान देखकर अपवर्तन करनेपर ऐसा $\equiv ७ \equiv ७ \frac{१}{२} \frac{१}{११}$ होता है । इसको सर्वद्रव्य $\equiv ७ \equiv ७$ में से घटाना।
२११।१।२

सो समच्छेद विधान द्वारा मूलराशि ऐसी $\equiv ७ \equiv ७ \frac{१}{२} \frac{१}{११}$ और ऋणराशि ऐसी
२११।१।२

$\equiv ७ \equiv ७ \frac{१}{२} \frac{१}{११}$ । सो ऋणराशि के गुणकार में एक कम है उसका प्रमाण ऐसा
२११।१।२

$\equiv ७ \equiv ७$ । उसको जुदा रखकर अवशेष ऐसा $\equiv ७ \equiv ७ \frac{१}{२} \frac{१}{११}$ उसको मूलराशि
२११।१।२

ऐसा होता है $\equiv 9 \equiv 9 \pmod{12}$

समस्त परिणाम धन $\equiv ० \equiv ०$, गच्छ २१११, चय $\equiv ० \equiv ०$
२१११।२१११।११

$$\text{चयधन} \equiv \text{ॐ} \equiv \text{ॐ} \frac{१}{२} \frac{n}{n} \frac{१}{२} \frac{n}{n} = \equiv \text{ॐ} \equiv \text{ॐ} \frac{१}{२} \frac{n}{n} \frac{१}{२} \frac{n}{n}$$

$$\text{आदिधन} = \text{सर्वधन} - \text{चयधन} \quad |$$

$$\equiv \equiv - \equiv \equiv \frac{9}{2} \frac{n}{2}$$

समच्छेद करनेपर

$$\frac{\equiv \textcircled{3} \equiv \textcircled{3} | 2 \textcircled{4} \textcircled{4} | \textcircled{4} | 2}{2 \textcircled{4} \textcircled{4} | \textcircled{4} | 2} - \left[\frac{\equiv \textcircled{3} \equiv \textcircled{3} | 2 \textcircled{4} \textcircled{4}}{2 \textcircled{4} \textcircled{4} | \textcircled{4} | 2} - \frac{\equiv \textcircled{3} \equiv \textcircled{3}}{2 \textcircled{4} \textcircled{4} | \textcircled{4} | 2} \right]$$

ऋण को घटाना और ऋण के ऋण को धन करना ।

$$\frac{\equiv\equiv\equiv\equiv\equiv}{\equiv\equiv\equiv\equiv\equiv} \frac{9}{n} + \frac{\equiv\equiv\equiv\equiv\equiv}{\equiv\equiv\equiv\equiv\equiv} = \frac{\equiv\equiv\equiv\equiv\equiv}{\equiv\equiv\equiv\equiv\equiv} \frac{9}{n}$$

इस आदिधन को गच्छ २११ का भाग देनेपर प्रथमसमय संबंधी परिणाम संख्या

$$\begin{array}{r} 9 \\ \hline 9 \quad 0 \\ \hline \end{array}$$

की संदृष्टि ऐसी है $\equiv 0 \equiv 0 \mid 2 \quad 1 \quad 1 \quad 1 \mid 2$ । इसमें चय मिलाना । सो चय के $2 \quad 1 \quad 1 \mid 2 \quad 1 \quad 1 \mid 2$

और इसके अन्य हार समान देखकर दो से समच्छेद करनेपर (चय) ऐसा होता है

$$\equiv 0 \equiv 0 \mid 2$$

$2 \quad 1 \quad 1 \mid 2 \quad 1 \quad 1 \mid 2$ । सो यहां असंख्यातलोक गुणित असंख्यात लोक को समान देखकर आगे के गुणकारों के ऊपर एक अधिक की जगह तीन अधिक की संदृष्टि करनेपर

$$\begin{array}{r} 3 \\ \hline 9 \quad 0 \\ \hline \end{array}$$

द्वितीय समय संबंधी परिणाम संख्या की संदृष्टि ऐसी होती है $\equiv 0 \equiv 0 \mid 2 \quad 1 \quad 1 \quad 1 \mid 2$
 $2 \quad 1 \quad 1 \mid 2 \quad 1 \quad 1 \mid 2$

$$\begin{array}{r} 9 \quad 0 \\ \hline \end{array}$$

इसप्रकार एक एक चय मिलाते हुये एक कम गच्छमात्र चय ऐसा $\equiv 0 \equiv 0 \mid 2 \quad 1 \quad 1 \quad 1 \mid 2$
 $2 \quad 1 \quad 1 \mid 2 \quad 1 \quad 1 \mid 2$

इसको प्रथम समय संबंधी परिणाम संख्या में मिलानेपर अंतिम समय संबंधी परिणाम संख्या आती है । सो यहां अन्य हारों की समानता देखकर दो से समच्छेद किया हुआ ऐसा

$$\begin{array}{r} 9 \quad 0 \\ \hline \end{array}$$

हुआ - $\equiv 0 \equiv 0 \mid 2 \quad 1 \quad 1 \quad 1 \mid 2$ । यहां गुणकार के ऊपर ऋण है उसका प्रमाण ऐसा $2 \quad 1 \quad 1 \mid 2 \quad 1 \quad 1 \mid 2$

$$\equiv 0 \equiv 0 \mid 2$$

। सो इसको जुदा रखकर अवशेष ऐसा रहा $\equiv 0 \equiv 0 \mid 2 \quad 1 \quad 1 \quad 1 \mid 2$
 $2 \quad 1 \quad 1 \mid 2 \quad 1 \quad 1 \mid 2$

वहां असंख्यातलोक गुणित असंख्यातलोक और दो बार संख्यात गुणित आवली को समान देखकर, आगे का दो रहा उसे मूलराशि के गुणकार में अधिक करना । सो मूलराशि जो प्रथम समय संबंधी परिणाम पुंज उसमें $1 \mid 2$ ऐसे गुणकार के ऊपर जहां एक कम था वहां एक अधिक करना । पुनश्च जो ऋण जुदा रखा था, उसके असंख्यातलोक गुणित असंख्यातलोक को समान देखकर आगे जो दो रहे, उसे मूलराशि के उससे आगे के $2 \quad 1 \quad 1 \mid 2$ ऐसे गुणकार में से घटाना । सो इनके ऊपर जहां एक अधिक

की संदृष्टि थी, वहां एक कम की संदृष्टि करनी । ऐसे करनेपर अंतिम समय संबंधी

परिणाम संख्या की संदृष्टि ऐसी होती है $\equiv \text{३} \equiv \text{३} \mid \text{२} \text{१११} \mid \text{११२}$ । पुनश्च इसमें दो $\text{२१११} \mid \text{२१११} \mid \text{११२}$

से समच्छेद किया हुआ एक चय घटाने के लिये असंख्यातलोक गुणित असंख्यात लोक के आगे गुणकारों के ऊपर जहां एक कम की संदृष्टि थी, वहां तीन कम की संदृष्टि

करनेपर उपांत समय संबंधी परिणाम पुंज की संदृष्टि ऐसी $\equiv \text{३} \equiv \text{३} \mid \text{२} \text{१११} \mid \text{११२}$ $\text{२१११} \mid \text{२१११} \mid \text{११२}$

होती है । इसप्रकार अपूर्वकरण में संदृष्टि कही ।

यहां अनुकृष्टि रचना है नहीं ।

[विशेषार्थ - प्रथम समय संबंधी परिणाम + चय = द्वितीय समय संबंधी परिणाम

$$\begin{array}{c} \text{१} \\ \hline \text{११} \\ \hline \equiv \text{३} \equiv \text{३} \mid \text{२} \text{१११} \mid \text{११२} \\ \text{२१११} \mid \text{२१११} \mid \text{११२} \end{array} + \begin{array}{c} \equiv \text{३} \equiv \text{३} \mid \text{२} \\ \text{२१११} \mid \text{२१११} \mid \text{११२} \end{array} = \begin{array}{c} \text{३} \\ \hline \text{११} \\ \hline \equiv \text{३} \equiv \text{३} \mid \text{२} \text{१११} \mid \text{११२} \\ \text{२१११} \mid \text{२१११} \mid \text{११२} \end{array}$$

प्रथम समय संबंधी परिणाम + एक कम गच्छप्रमाण चय = अंतिम समय संबंधी परिणाम

$$\begin{array}{c} \text{१} \\ \hline \text{११} \\ \hline \equiv \text{३} \equiv \text{३} \mid \text{२} \text{१११} \mid \text{११२} \\ \text{२१११} \mid \text{२१११} \mid \text{११२} \end{array} + \begin{array}{c} \text{११} \\ \hline \equiv \text{३} \equiv \text{३} \mid \text{२} \text{१११} \mid \text{११२} \\ \text{२१११} \mid \text{२१११} \mid \text{११२} \end{array}$$
$$\begin{array}{c} \text{१} \\ \hline \text{११} \\ \hline \equiv \text{३} \equiv \text{३} \mid \text{२} \text{१११} \mid \text{११२} \\ \text{२१११} \mid \text{२१११} \mid \text{११२} \end{array} + \begin{array}{c} \equiv \text{३} \equiv \text{३} \mid \text{२} \text{१११} \mid \text{११२} \\ \text{२१११} \mid \text{२१११} \mid \text{११२} \end{array} = \begin{array}{c} \equiv \text{३} \equiv \text{३} \mid \text{२} \\ \text{२१११} \mid \text{२१११} \mid \text{११२} \end{array}$$

अंत समय परिणाम

$$\frac{9}{9} = 1 \quad \frac{3}{9} = \frac{1}{3}$$

पुनश्च सूक्ष्मसाम्प्रदाय के वर्णन में पूर्वस्पर्धक आदि की संदृष्टि में जघन्य वर्णना की संदृष्टि व ऐसी, एक गुणहानि में जितने स्पर्धक पाये जाते हैं उनके प्रमाण की ९ ऐसी, नाना गुणहानि के प्रमाण की ना ऐसी, अनंत की ख ऐसी, स्पर्धक शलाका को असंख्यात गुणा अपकर्षण भागहार का भाग देनेपर जो प्रमाण होता है उसकी ऐसी ९, एक स्पर्धक में वर्णना का जितना प्रमाण है उसकी संदृष्टि ऐसी ४। इसप्रकार ३।७

जानकर, वहां अविभाग प्रतिच्छेदों की अपेक्षा नानागुणहानि और स्पर्धकशलाका से गुणित जघन्य वर्ग मात्र उत्कृष्ट पूर्वस्पर्धक के वर्ग की संदृष्टि ऐसी **व९ना**, जघन्य वर्गमात्र जघन्य पूर्वस्पर्धक के वर्ग की ऐसी **व**, इसको अनंत का भाग देनेपर उत्कृष्ट अपूर्वस्पर्धक के वर्ग की ऐसी **व**, इसको असंख्यातगुणा अपकर्षण भागहार से भाजित स्पर्धकशलाका

का भाग देनेपर जघन्य अपूर्वस्पर्धक के वर्ग की ऐसी $\frac{व}{ख \frac{१}{उ २}}$, इसको अनंत का भाग देनेपर उत्कृष्ट बादर कृष्टि के वर्ग की ऐसी $\frac{व}{ख \frac{१}{उ २}}$, इसको वर्गणाशलाका के अनंतवें

भाग का भाग देनेपर जघन्य बादर कृष्टि के वर्ग की ऐसी $\frac{व}{ख९ख४}$, इसको अनंत

का भाग देनेपर उत्कृष्ट सूक्ष्मकृष्टि के वर्ग की ऐसी $\frac{व}{ख९ख४}$ । इसको वर्गणाशलाका

के अनंतवें भाग का भाग देनेपर जघन्य सूक्ष्मकृष्टि के वर्ग की संदृष्टि ऐसी होती है

$\frac{व}{ख९ख४}$ ।
 $\frac{उ३ख}{ख९ख४}$

पुनश्च इसी गुणस्थान अधिकार में गुणश्रेणी निर्जरा के कथन में संदृष्टि कहते हैं।
वहां किंचित् कम डेढ़ गुणहानि गुणित समयप्रबद्धप्रमाण कर्म परमाणु समूहरूप द्रव्य ऐसा
स३१२- । सो यह आयु बिना सात कर्मों का है, इसलिये इसको सात का भाग
देनेपर ज्ञानावरण का द्रव्य ऐसा स३१२- इसको अनंत का भाग देकर एक भाग ऐसा

स३१२- सर्वघाति केवलज्ञानावरण को देकर अवशेष बहुभाग ऐसा स३१२- $\frac{१०}{७ख}$ ।

यहां बहुभाग में एक कम भागहार से गुणा करके सम्पूर्ण भागहार का भाग देते हैं।
पुनश्च यहां गुणकार में एक कम था उसे महत् प्रमाण में नहीं गिना और भाज्य भागहार
में अनंत का अपवर्तन किया तब स३१२- ऐसा हुआ । इसको मति, श्रुत, अवधि,
मनःपर्यय ज्ञानावरण के भाग करने के लिये चार का भाग देनेपर मतिज्ञानावरण का
द्रव्य ऐसा स३१२- $\frac{१०}{७४४}$ । इसको अपकर्षण भागहार की संदृष्टि प्राकृत नाम के आदि अक्षर

से ऐसी उ उसका भाग देनेपर बहुभाग ऐसा स३१२- $\frac{१०}{७४४उ}$ होता है । सो जैसे थे
वैसे ही रहते हैं। एक भाग ऐसा स३१२- $\frac{१०}{७४४उ}$, इसको पत्य का असंख्यातवां भाग ऐसा

प, उसका भाग देकर बहुभाग ऐसा स३१२- $\frac{१०}{७४४उप}$, उसे उपरितन स्थिति में देना ।

अवशेष एक भाग ऐसा स३१२- $\frac{१०}{७४४उप}$, उसको असंख्यातलोक ऐसा $\equiv ३$, उसका भाग

देकर बहुभाग ऐसा $\frac{90}{8}$ गुणश्रेणी आयाम में देना, अवशेष एक भाग ऐसा
 $\frac{90}{8}$ $\frac{90}{8}$

स० १२-१ उदयावली में देना ।
 $\frac{90}{8}$ $\frac{90}{8}$

पुनश्च जो यह उदयावली में द्रव्य दिया उसको यहां आवली की संदृष्टि चार
 का अंक (यहां पर आवली के लिये ४ कहा है, पहले दो कहा था और प्रतरावली
 के लिये ४ कहा था) उसका भाग देनेपर मध्यधन ऐसा स० १२- $\frac{90}{8}$ । पुनश्च
 $\frac{90}{8}$ $\frac{90}{8}$

एक कम आवली का आधा ऐसा $\frac{90}{8}$ उससे हीन दो गुणहानि का प्रमाण ऐसा

१६- $\frac{90}{8}$ यहां गुणहानि आठ से दो गुणा ऐसी दो गुणहानि के प्रमाण की संदृष्टि
 सोलह १६ उसके आगे घटाने की संदृष्टि जाननी । दो गुणहानि का ही नाम निषेकहार
 है । सो एक कम आवली के आधे से हीन दो गुणहानि का भाग उस मध्यधन
 को देनेपर चय का प्रमाण ऐसा है - स० १२- $\frac{90}{8}$ इसको दो गुणहानि
 $\frac{90}{8}$ $\frac{90}{8}$

ऐसी १६ उससे गुणा करनेपर प्रथम निषेक का प्रमाण ऐसा स० १२-१६ $\frac{90}{8}$
 $\frac{90}{8}$ $\frac{90}{8}$

उसमें से एक चय घटानेपर द्वितीय निषेक ऐसा स० १२-१६-१ $\frac{90}{8}$ । यहां
 $\frac{90}{8}$ $\frac{90}{8}$

चय की और प्रथम निषेक की अन्य समानता देखकर आगे गुणकार दो गुणहानि में
 से एक घटाने की आगे ऐसी -१ संदृष्टि की है । इसीप्रकार एक एक चय घटाते
 हुये एक कम आवली प्रमाण चय प्रथम निषेक में से घटानेपर अंतिम निषेक की संदृष्टि

ऐसी स० १२-१६- $\frac{90}{8}$ $\frac{90}{8}$ । यहां गुणकार दो गुणहानि में एक कम आवली
 $\frac{90}{8}$ $\frac{90}{8}$

प्रमाण घटाने की आगे ऐसी $-\frac{9n}{8}$ संदृष्टि जाननी । अब गुणश्रेणी आयाम अंतर्मुहूर्त मात्र, उसमें दिया हुआ द्रव्य ऐसा $\text{स०।१२-।}\overset{9n}{\equiv}\text{०}$ $\text{७।४।३।पू।}\equiv\text{०}$ उसको समय समय असंख्यात गुणा

द्वारा निषेक रचना दिखाते हैं । सो यहां असंख्यात की सहनानी चार करनेपर पहले समय शलाका एक १, दूसरे समय चार ४, तीसरे समय सोलह १६, अंतिम समय चौंसठ ६४, सबको जोड़नेपर अंकसंदृष्टि ८५ , उसका भाग गुणश्रेणी द्रव्य को देनेपर

ऐसी $\text{स०।१२-।}\overset{9n}{\equiv}\text{०}$, इसको अपनी अपनी एक, चार, सोलह, चौंसठ शलाका से $\text{७।४।३।पू।}\equiv\text{०।८५}$

गुणित करनेपर प्रथमादि निषेकों का प्रमाण ऐसा होता है

प्रथम निषेक	द्वितीय निषेक	तृतीय निषेक	अंतिम निषेक
$\text{स०।१२-।}\overset{9n}{\equiv}\text{०।१}$ $\text{७।४।३।पू।}\equiv\text{०।८५}$	$\text{स०।१२-।}\overset{9n}{\equiv}\text{०।४}$ $\text{७।४।३।पू।}\equiv\text{०।८५}$	$\text{स०।१२-।}\overset{9n}{\equiv}\text{०।१६}$ $\text{७।४।३।पू।}\equiv\text{०।८५}$	$\text{स०।१२-।}\overset{9n}{\equiv}\text{०।६४}$ $\text{७।४।३।पू।}\equiv\text{०।८५}$

पुनश्च यहां अंतर्मुहूर्त के भेदों में जघन्य अंतर्मुहूर्त संख्यात आवली मात्र ऐसा २१, इससे संख्यात गुणा उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त ऐसा २११ । सो उत्कृष्ट में से जघन्य घटाने के लिये संख्यात गुणित आवली को समान देखकर आगे के संख्यात में से एक घटानेपर ऐसा $२१\frac{9n}{११}$ इसके ऊपर एक जोड़नेपर अंतर्मुहूर्त के सर्व भेदों का प्रमाण

ऐसा $\frac{9}{२१\frac{9n}{११}}$ होता है ।

अब जीवसमास अधिकार में संदृष्टि कहते हैं -

पृथ्वी आदि के प्राकृत नाम के आदि अक्षररूप संदृष्टि लिखकर उसके नीचे पर्याप्त, अपर्याप्त वा निर्वृत्ति अपर्याप्त लब्धि अपार्यप्तपने के यथासंभवपना से दो या तीन का अंक लिखनेपर जीवसमास की संदृष्टि होती है । जैसे चौदह जीवसमास की संदृष्टि ऐसी -

सू.ए. बा.ए. द्वी त्री च अपं संपं ऐसे ही अन्यत्र जानना ।
 २ २ २ २ २ २ २

पुनश्च जीवों की अवगाहना में सबसे जघन्य अवगाहना की संदृष्टि ऐसी

इसका अर्थ आगे लिखेंगे । पुनश्च उत्कृष्ट अवगाहना में एकेन्द्रिय
 $६।८।२२$
 $\frac{१}{९}।१९।८।९।८।२२।१।९$
 $\frac{१}{९}$

कमल का व्यास एक योजन उससे तीन गुणा १।३ परिधि को व्यास की चौथाई के भाग $\frac{१}{४}$ से और वेध (ऊंचाई) हजार योजन से गुणा करनेपर क्षेत्रफल इतना ७५० (घनयोजन) होता है । द्वीन्द्रिय शंख का व्यास बारह योजन १२ को उतने ही से गुणा करके १४४ उसमें मुख चार ४ योजन का आधा २ घटाकर १४२, मुख के आधे का वर्ग ४ जोड़कर १४६, उसको दोगुणा करके २९२, चार का भाग देनेपर ७३, पांचगुणा करनेपर ३६५ (घनयोजन) क्षेत्रफल होता है ।

त्रीन्द्रिय रक्त बिच्छू का भुज (लम्बाई) तीन योजन का चौथा भाग, कोटि (चौड़ाई) उसका आठवां भाग, वेध (ऊंचाई) इसका भी आधा इनको परस्पर गुणा करनेपर $३।३।३$ क्षेत्रफल २७ (घनयोजन) होता है । चतुरिन्द्रिय भ्रमर का भुज एक $४।३२।६४$ ८१९२ योजन, कोटि पौन योजन, वेध आधा योजन को परस्पर गुणा करनेपर $१।३।१$ क्षेत्रफल $१।४।२$ ३ (घनयोजन) होता है ।

पंचेन्द्रिय मत्स्य (महामत्स्य) का भुज हजार योजन, कोटि पांच सौ योजन, वेध अढ़ाई सौ योजन इनको परस्पर गुणा करनेपर $१०००।५००।२५०$ क्षेत्रफल १२५०००००० (घनयोजन) होता है ।

इसप्रकार अवगाहना के प्रदेशों के प्रमाण द्वारा एकेन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय की उत्कृष्ट अवगाहना क्रम से चार, तीन, एक, दो, पांच बार संख्यात गुणित घनांगुल प्रमाण ऐसी जाननी -

ए	द्वी	त्री	च	पं
६१११११	६११११	६१	६१११	६१११११११

पुनश्च जघन्य अवगाहना पर्याप्त द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय में क्रम

से चार, तीन, दो, एक बार संख्यात से भाजित घनांगुल प्रमाण ऐसी जाननी -

द्वी	त्री	च	पं
६	६	६	६
१११११	१११	११	१

पुनश्च जीवों के अवगाहना के चौंसठ स्थानों में प्रथम सूक्ष्म निगोद लब्धि अपर्याप्तक की जघन्य अवगाहना ऐसी होती है ६।८।२२ $\frac{१}{२}$ । यहां घनांगुल की संदृष्टि

$$\frac{१}{२}।१९।८।९।८।२२।१।९$$

ऐसी ६, उसके आगे गुणकाररूप आवली (घनावली) का असंख्यातवां भाग बाइस बार उसकी संदृष्टि ऐसी ८।२२ और उसके नीचे भागहाररूप पत्य का असंख्यातवां भाग उन्नीस बार उसको संदृष्टि ऐसी $\frac{१}{२}।१९$, आवली का असंख्यातवां भाग नौ बार उसकी संदृष्टि ऐसी ८।९, एक अधिक आवली का असंख्यातवां भाग बाइस बार उसकी संदृष्टि

ऐसी $\frac{१}{२}।२२$, संख्यात नौ बार की संदृष्टि ऐसी १।९ जाननी ।

इसको आवली का असंख्यातवां भाग ऐसा $\frac{८}{२}$ उससे गुणा करनेपर सूक्ष्म अपर्याप्त वायुकायिक की जघन्य अवगाहना होती है । सो इस गुणकार का और भागहार में एक बार आवली का असंख्यातवां भाग है उसका अपवर्तन करनेपर भागहार में नौ बार की जगह आठ बार आवली का असंख्यातवां भाग लिखनेपर सूक्ष्म अपर्याप्त वायुकायिक की जघन्य अवगाहना की संदृष्टि ऐसी होती है - ६।८।२२ $\frac{१}{२}$ ।

$$\frac{१}{२}।१९।८।८।८।२२।१।९$$

इसीप्रकार सूक्ष्म अपर्याप्त तेजस्कायिक, अप्कायिक, पृथ्वीकायिक में ऐसे ही गुणकार से अपवर्तन करनेपर भागहार में आवली के असंख्यातवें भाग को सात, छह, पांच बार लिखने से उनकी संदृष्टि होती है। पुनश्च इससे बादर अपर्याप्त वायुकायिक, तेजस्कायिक, अप्कायिक, पृथ्वीकायिक, निगोद और प्रतिष्ठित वनस्पति, अप्रतिष्ठित वनस्पति, द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय की जघन्य अवगाहना में क्रम से पत्य

के असंख्यातवें भाग का गुणकार है । उससे उन्नीस बार पत्य के असंख्यातवें भाग मात्र गुणकार में से एक एक बार अपवर्तन करनेपर उन्नीस की जगह एक एक कम करते हुये पंचेन्द्रिय में आठ बार पत्य के असंख्यातवें भाग का भागहार होता है ।

पुनश्च इससे सूक्ष्म निगोद पर्याप्त की जघन्य अवगाहना आवली के असंख्यातवें भाग गुणा है । सो यहां भी ऐसे भागहार से अपवर्तन करना । पुनश्च इससे सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त की उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । सो विशेष का प्रमाण पूर्व स्थान को आवली के असंख्यातवें भाग का भाग देनेपर एक भाग मात्र है । सो यहां पूर्व स्थान को एक अधिक आवली के असंख्यातवें भाग से गुणा करके आवली के असंख्यातवें भाग का भाग देनेपर एक भाग का मिलाना होता है । सो इनके द्वारा पहले एक अधिक आवली के असंख्यातवें भाग का बाइस बार भागहार और आवली के असंख्यातवें भाग का बाइस बार गुणकार था, उनमें से एक बार अपवर्तन करनेपर इक्कीस बार करना ।

इसीप्रकार आगे भी पूर्व स्थान जिस जिस गुणकार से गुणित हो, उस उस गुणकार द्वारा भागहार में से उस उस प्रमाण को एक एक बार घटाना और जहां विशेष अधिक हो वहां आवली के असंख्यातवें भाग को गुणकार में से और एक अधिक आवली के असंख्यातवें भाग को भागहार में से एक एक बार घटाना । घटानेपर जितनी बार था उतनी बार पूर्ण होनेपर वह भागहार वा गुणकार नहीं लिखना ।

सो सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त की उत्कृष्ट अवगाहना से सूक्ष्म निगोद पर्याप्त की उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । इससे सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त की जघन्य अवगाहना आवली के असंख्यातवें भाग गुणा है । इससे सूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्त की उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । इससे सूक्ष्म वायुकायिक पर्याप्त की उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है ।

इसीतरह तेजस्कायिक, अप्कायिक, पृथ्वीकायिक इन पर्याप्तों की एक एक जघन्य अवगाहना पूर्व स्थान से आवली के असंख्यातवें भाग गुणा और इनके अपर्याप्त और पर्याप्त की दो दो उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक जाननी । ऐसे आठ स्थान होनेपर सूक्ष्म पृथ्वीकायिक की उत्कृष्ट अवगाहना से बादर पर्याप्त वायुकायिक की जघन्य अवगाहना

पल्य के असंख्यातवें भाग गुणा है । इससे बादर अपर्याप्त वायुकायिक की उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है । इससे बादर पर्याप्त वायुकायिक की उत्कृष्ट अवगाहना विशेष अधिक है ।

इसीतरह बादर तेजस्कायिक, अप्कायिक, पृथ्वीकायिक, निगोद, प्रतिष्ठितप्रत्येक इनके पर्याप्त का जघन्य का एक स्थान पल्य के असंख्यातवें भाग गुणा और इनके अपर्याप्त-पर्याप्त के उत्कृष्ट के दो दो स्थान विशेष अधिक जानने । पुनश्च उससे पर्याप्त अप्रतिष्ठित प्रत्येक, द्वीन्द्रिय इन दोनों की जघन्य अवगाहना क्रम से पल्य के असंख्यातवें भाग गुणा है ।

पुनश्च उससे पर्याप्त त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय पर्याप्तों की जघन्य अवगाहना और त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, अप्रतिष्ठित प्रत्येक, पंचेन्द्रिय अपर्याप्तों की उत्कृष्ट अवगाहना क्रम से संख्यात गुणा है । पुनश्च इससे त्रीन्द्रिय पर्याप्त की उत्कृष्ट अवगाहना संख्यात गुणा है । सो गुणकार का प्रमाण यहां भागहार से बहुत अधिक है, इसलिये संख्यात घनांगुल प्रमाण जानना । पुनश्च उससे चतुरिन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, अप्रतिष्ठितप्रत्येक, पंचेन्द्रिय इनकी उत्कृष्ट अवगाहना क्रम से संख्यात गुणा जानना । [सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका जीवकाण्ड में अवगाहना का यंत्र देखना ।]

पुनश्च सूक्ष्म निगोद लब्धिअपर्याप्त के जघन्य अवगाहनास्थान से लेकर एक एक प्रदेश वृद्धि के अनुक्रम से सूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्त के जघन्य अवगाहनास्थान तक चतुःस्थानपतित वृद्धि होती है । वहां संदृष्टि कहते हैं -

वहां असंख्यातभागवृद्धि में सूक्ष्म निगोद लब्धिअपर्याप्त की जघन्य अवगाहना ऐसी
 ६।८।२२ १
 ५।१९।८।९।८।२२।१।९
 ७ ७ ७

ऐसी ज, इसमें एक जोडनेपर संदृष्टि ऐसी ^१ज । यहां एक अधिक की संदृष्टि ऊपर जाननी । ऐसे ही दो आदि अधिक की संदृष्टि ऐसी - ^१ज ^२ज ^३ज ^४ज ^५ज इत्यादि मध्य भेदों के ग्रहण निमित्त बीच में बिंदी लिखकर अंत में उस जघन्य को जघन्य परीतासंख्यात

की संदृष्टि ऐसी १६ उसका भाग देनेपर ऐसा $\frac{ज}{१६}$ इसको जघन्य के ऊपर अधिक करनेपर ऐसा होता है $\frac{ज}{१६}$ ।

यहां आदि ऐसा $\frac{१}{ज}$, अंत ऐसा $\frac{ज}{१६}$ है । अंत में से आदि घटानेपर ऐसा $\frac{१०}{ज}$ होता है । $\left[\text{विशेषार्थ} - ज + \frac{ज}{१६} - (ज + १) = ज + \frac{ज}{१६} - ज - १ = \frac{ज}{१६} - १ = \frac{१०}{ज} \right]$

इसको वृद्धि का प्रमाण एक का भाग देनेपर ऐसा $\frac{१०}{ज \cdot १६ \cdot १९}$ और इसमें एक

जोड़नेपर $\frac{ज}{१६ \cdot १९} \left[\text{विशेषार्थ} - \frac{ज}{१६ \cdot १९} - १ + १ = \frac{ज}{१६ \cdot १९} \right]$

इतना सर्व असंख्यातभागवृद्धि के स्थानों का प्रमाण होता है । पुनश्च असंख्यातभागवृद्धि

के अंत स्थान में एक जोड़नेपर अवक्तव्यभागवृद्धि का आदिस्थान ऐसा $\frac{१}{ज}$ । पुनश्च एक एक प्रदेश की वृद्धि द्वारा उत्कृष्ट संख्यात की संदृष्टि ऐसी १५ उसका भाग जघन्य को देकर एक घटानेपर ऐसा $\frac{१०}{ज}$ । उसको जघन्य में जोड़नेपर अवक्तव्यभागवृद्धि

का अंतस्थान ऐसा $\frac{१०}{ज}$ $\left[\text{विशेषार्थ} - ज + \left(\frac{ज}{१५} - १ \right) \right]$ । वहां समच्छेद विधान द्वारा

या ऋण के धन को राशि का ऋण करके अंत में से आदि घटानेपर ऐसा $\frac{२०}{ज \cdot १६ \cdot १५}$ ।

यहां आदि और अंत में ज की समानता देखकर दूर करनेपर अवशेष अधिक दोनों राशि ऐसी $\frac{१}{ज}$ $\frac{१०}{ज}$ । इनके ऊपर अधिक और हीन है । उनको जुदा रखकर दोनों

का समच्छेद करनेपर दोनों राशि ऐसी $\frac{ज}{१५} \frac{ज}{१६}$ । यहां दोनों की अन्य समानता $\frac{१६}{१५} \frac{ज}{१५}$

देखकर धनराशि के सोलह के गुणकार में से ऋणराशि का पंद्रह का गुणकार घटानेपर ऐसा $\frac{ज}{१५}$ । पुनश्च इसके ऊपर एक तो ऋण का धन और एक धनराशि का $\frac{१५}{१५}$

ऋण ये दो घटानेपर ऐसी $\frac{२०}{ज} \frac{१५}{१५}$ संदृष्टि सिद्ध होती है । इसमें एक जोड़नेपर

अवक्तव्यभागवृद्धि के सर्व स्थानों का प्रमाण ऐसा होता है $\frac{१०}{ज} \frac{१५}{१५}$ ।

$$\left[\text{विशेषार्थ - अवक्तव्यभागवृद्धि के स्थान} = \frac{\text{अवक्तव्यभागवृद्धि का अंतस्थान} - \text{आदिस्थान} + १}{१} \right]$$

$$\frac{\frac{१०}{ज} \frac{१५}{१५} - \frac{१}{ज} \frac{१६}{१५}}{१} + १ = \frac{१०}{ज} \frac{१५}{१५} - \frac{१}{ज} \frac{१६}{१५} + १$$

$$\left[\frac{१०}{ज} \frac{१५}{१५} - \frac{१}{ज} \frac{१६}{१५} + १ = \frac{२०}{ज} \frac{१५}{१५} + १ = \frac{१०}{ज} \frac{१५}{१५} \right]$$

पुनश्च अवक्तव्यभागवृद्धि के अंतस्थान में एक जोड़नेपर संख्यातभागवृद्धि का

आदिस्थान ऐसा $\frac{ज}{१५}$ और जघन्य का आधा ऐसा $\frac{ज}{२}$ (क्योंकि २ संख्या जघन्य

संख्यात है)। उसको जघन्य में जोड़नेपर अंतस्थान ऐसा $\frac{ज}{२}$ । वहां पूर्वोक्तप्रकार समच्छेद करके अंत में से आदि घटानेपर ऐसा $\frac{ज}{२} \frac{१५}{१५}$ । यहां उत्कृष्ट संख्यात की संदृष्टि पंद्रह के आगे दो घाटि की संदृष्टि ऐसी जाननी -२ । इसको एक का भाग देकर

उसमें एक जोड़नेपर संख्यातभागवृद्धि के सर्व स्थानों का प्रमाण ऐसा $\frac{१}{ज} \frac{१५}{१५}$ ।

$$\text{विशेषार्थ -संख्यातभागवृद्धि के स्थान} = \frac{\text{संख्यातभागवृद्धि का अंतस्थान} - \text{आदिस्थान} + १}{१}$$

$$\text{अंत-आदि} = \frac{\text{ज२}}{\text{ज}} - \frac{\text{ज१५}}{\text{ज}} = \text{ज} + \frac{\text{ज}}{२} - (\text{ज} + \frac{\text{ज}}{१५}) = \frac{\text{ज}}{२} - \frac{\text{ज}}{१५} = \frac{\text{ज}।१५ - \text{ज}।२}{२।१५ - २।१५}$$

$$\text{एक अधिक करनेपर} - \frac{\text{ज}।१५ - २}{२।१५} + १ = \frac{१}{\frac{\text{ज}।१५ - २}{२।१५}} \quad]$$

पुनश्च संख्यातभागवृद्धि के अंतस्थान में एक जोड़नेपर अवक्तव्यभागवृद्धि का

आदिस्थान ऐसा $\frac{\frac{१}{\text{ज}}}{२}$ । पुनश्च एक कम जघन्य अवगाहना का प्रमाण ऐसा $\frac{१०}{\text{ज}}$ उसको

जघन्य में जोड़नेपर अंतस्थान ऐसा $\frac{१०}{\text{ज}}$ । यहां पूर्वोक्त प्रकार से समच्छेद विधान द्वारा या ऋण के धन को राशि का ऋण करके अंत में से आदि घटाकर उसमें एक जोड़ते हैं तब सर्व अवक्तव्यभागवृद्धि के स्थान ऐसे $\frac{१०}{२}$ होते हैं।

$$[\text{विशेषार्थ} - \text{सर्वस्थान} = \text{अंतस्थान} - \text{आदिस्थान} + १$$

$$\left(\frac{\frac{१०}{\text{ज}}}{\text{ज}} - \frac{\frac{१}{\text{ज}}}{२} \right) + १ = \left(\frac{१०}{\text{ज}} - \frac{१}{२} \right) + १ = (\text{ज} - १ - \frac{\text{ज}}{२} - १) + १ = \frac{\text{ज}}{२} - १ = \frac{१०}{२} \quad]$$

पुनश्च अवक्तव्यभागवृद्धि के अंतस्थान में एक जोड़नेपर संख्यातगुणवृद्धि का आदिस्थान ऐसा ज२ । यहां जघन्य को दो का गुणकार जानना । पुनश्च प्रदेशवृद्धि के क्रम से उत्कृष्ट संख्यात ऐसा १५, उससे जघन्य को गुणा करनेपर अंतस्थान ऐसा ज।१५ । यहां अंत में से आदि घटाने को दोनों जगह जघन्य का समानपना देखकर पंद्रह के आगे दो कम की संदृष्टि करनी ज।१५-२। इसमें एक जोड़नेपर सर्व संख्यातगुणवृद्धि

के स्थानों का प्रमाण ऐसा $\frac{9}{ज११५-२}$ ।

पुनश्च संख्यातगुणवृद्धि के अंतस्थान में एक जोड़नेपर अवक्तव्यगुणवृद्धि का आदिस्थान ऐसा $\frac{9}{ज११५}$ और एक एक प्रदेश वृद्धि के क्रम से जघन्य परीतासंख्यात ऐसा १६, उससे जघन्य को गुणा करके एक घटानेपर अंतस्थान ऐसा $\frac{१०}{ज११६}$ । यहां अंत में से आदि घटाकर एक मिलानेपर अवक्तव्यगुणवृद्धि के सर्व स्थानों का प्रमाण ऐसा $\frac{१०}{ज}$ होता है ।

[विशेषार्थ - अवक्तव्यगुणवृद्धि का अंतस्थान - आदिस्थान + १

$$\frac{१०}{ज११६} - \frac{१}{ज११५} + १ = ज१६ - १ - (ज११५ + १) + १ = ज - १ = \frac{१०}{ज}$$

पुनश्च अवक्तव्यगुणवृद्धि के अंतस्थान में एक जोड़नेपर असंख्यातगुणवृद्धि का आदिस्थान ऐसा ज१६। पुनश्च प्रदेशवृद्धि के क्रम से आवली के असंख्यातवें भाग से जघन्य को गुणा करनेपर अंतस्थान ऐसा ज८। अंत में से आदि घटाकर एक मिलानेपर असंख्यातगुणवृद्धि के सर्व स्थानों का प्रमाण ऐसा होता है $\frac{१}{ज८-१६}$ । यहां जघन्य

का गुणकार आवली के असंख्यातवें भाग, उसके आगे जघन्य परीतासंख्यात घटाने की संदृष्टि जाननी ।

[विशेषार्थ : ज८ - ज१६ = ज८-१६ इसमें एक मिलानेपर $\frac{१}{ज८-१६}$]

इसप्रकार आवली के असंख्यातवें भाग से सूक्ष्म निगोद लब्धिअपर्याप्त के जघन्य स्थान को गुणा करनेपर सूक्ष्म लब्धिअपर्याप्त वायुकायिक का जघन्य अवगाहना स्थान ऐसा $\frac{६।८।२२।८}{१।१९।८।९।८।२२।१।९}$ । यहां उस जघन्य स्थान को इस उत्कृष्ट स्थान में से घटाना।

सो अन्य सर्व समान देखकर आगे लिखा हुआ जो आवली के असंख्यातवें भाग का गुणकार उसमें से एक घटाकर जो हुआ उसमें एक जोड़ना तब जघन्य सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त के जघन्य स्थान से लेकर सूक्ष्म वायुकायिक अपर्याप्त के जघन्य स्थान तक

सर्व स्थानों का प्रमाण ऐसा होता है $\frac{9}{\text{६।८।२२।८}} \frac{9n}{\text{५।९९।८।९।८।२२।१।९}}$ ऐसे ही अन्य में जानना।

$$\left[\text{विशेषार्थ} - \text{ज} \frac{9}{\text{८}} - \text{ज} + 9 = \text{ज} \frac{9n}{\text{८}} + 9 = \frac{9}{\text{ज} \frac{9n}{\text{८}}} \right]$$

पुनश्च सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त के जघन्य स्थान से लेकर उत्कृष्ट स्थान तक कितने स्थान पाये जाते हैं उनकी संख्या लाने के लिये जघन्य स्थान ऐसा । $\frac{9}{\text{६।८।२२}} \frac{9}{\text{५।९९।८।९।८।२२।१।९}}$ इसको

आवली का असंख्यातवां भाग चार बार $\frac{9}{\text{८।४}}$ और पत्य का असंख्यातवां भाग ग्यारह बार $\frac{9}{\text{५।९९}}$ तथा आवली का असंख्यातवां भाग और एक अधिक आवली का असंख्यातवां भाग इनसे गुणा करके और आवली के असंख्यातवें भाग का भाग देकर अपवर्तन करनेपर उसका

उत्कृष्ट स्थान ऐसा $\left[\text{विशेषार्थ} - \text{ज} \frac{9}{\text{८।४।५।९९।८।८}} \right]$ अर्थात् $\frac{9}{\text{६।८।२२।८।४।५।९९।८।८}} \frac{9}{\text{५।९९।८।९।८।२२।१।९।८}}$

पुनश्च इस उत्कृष्ट स्थान में से जघन्य स्थान घटाना, सो दोनों के अन्य हार तो समान है । इसलिये आवली के असंख्यातवें भाग द्वारा समच्छेद करके घटाने योग्य

ऋणराशि ऐसी होती है - $\left[\text{ज} \frac{9}{\text{८}} \right] = \frac{9}{\text{६।८।२२।८}} \frac{9}{\text{५।९९।८।९।८।२२।१।९।८}}$ ।

और धनराशि में आवली के असंख्यातवें भाग का गुणकार आगे था उसको बाइस

के आगे लिखनेपर धनराशि ऐसी हुयी $\underset{\circ}{६}।\underset{\circ}{८}।\underset{\circ}{२२}।\underset{\circ}{८}।\underset{\circ}{८}।\underset{\circ}{४}।\underset{\circ}{५}।\underset{\circ}{११}।\overset{१}{\underset{\circ}{८}}$ । यहां धनराशि
 $\underset{\circ}{५}।\underset{\circ}{१९}।\underset{\circ}{८}।\underset{\circ}{९}।\overset{१}{\underset{\circ}{८}}।\underset{\circ}{२२}।\underset{\circ}{११}।\underset{\circ}{९}।\underset{\circ}{८}$

और ऋणराशि में ऐसा $\underset{\circ}{६}।\underset{\circ}{८}।\underset{\circ}{२२}।\underset{\circ}{८}$ समान देखकर उसके आगे का गुणकार जो
 ऐसा है $\underset{\circ}{८}।\underset{\circ}{४}।\underset{\circ}{५}।\underset{\circ}{११}।\overset{१}{\underset{\circ}{८}}$ उसके ऊपर एक घटाने की संदृष्टि करनेपर अंत में से
 आदि घटाना हुआ, उसमें एक जोड़नेपर सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त के अवगाहना के

सर्व स्थानों का प्रमाण ऐसा होता है- $\frac{\overset{१}{\text{—}}}{\underset{\circ}{१} \quad \curvearrowright}$ इनमें से दो घटानेपर
 $\underset{\circ}{६}।\underset{\circ}{८}।\underset{\circ}{२२}।\underset{\circ}{८}।\underset{\circ}{८}।\underset{\circ}{४}।\underset{\circ}{५}।\underset{\circ}{११}।\overset{१}{\underset{\circ}{८}}$
 $\underset{\circ}{५}।\underset{\circ}{१९}।\underset{\circ}{८}।\underset{\circ}{९}।\overset{१}{\underset{\circ}{८}}।\underset{\circ}{२२}।\underset{\circ}{११}।\underset{\circ}{९}।\underset{\circ}{८}$

सूक्ष्म निगोद अपर्याप्त के मध्यम अवगाहना के भेदों का प्रमाण ऐसा होता है

$\frac{\overset{१}{\text{—}}}{\underset{\circ}{१} \quad \curvearrowright}$ यहां दो घटाने के लिये एक अधिक की जगह एक कम
 $\underset{\circ}{६}।\underset{\circ}{८}।\underset{\circ}{२२}।\underset{\circ}{८}।\underset{\circ}{८}।\underset{\circ}{४}।\underset{\circ}{५}।\underset{\circ}{११}।\overset{१}{\underset{\circ}{८}}$
 $\underset{\circ}{५}।\underset{\circ}{१९}।\underset{\circ}{८}।\underset{\circ}{९}।\overset{१}{\underset{\circ}{८}}।\underset{\circ}{२२}।\underset{\circ}{११}।\underset{\circ}{९}।\underset{\circ}{८}$

की संदृष्टि जाननी, ऐसे ही अन्यत्र जानना।

पर्याप्ति अधिकार में संदृष्टि कहते हैं ।

वहां प्रथम अलौकिक गणित का कथन है । वहां पहले सामान्य वर्णन में जैसी
 संदृष्टि कही है वैसी जाननी । वहां संख्याप्रमाण में जघन्य संख्यात आदि की संदृष्टि
 सामान्य में कही है वैसी जाननी । पुनश्च अनवस्था आदि कुंड में एक नौ आदि प्रमाण
 रोम भरते हैं उनकी संदृष्टि $१९=$ है । पुनश्च जघन्य असंख्यातासंख्यात प्रमाण शलाका

विरलन देय राशि करते हैं वहां संदृष्टि ऐसी १४ वि४ दे४। शलाकाराशि में से एक घटानेपर ऐसी ४-१, दो घटानेपर ऐसी ऐसी ४-२ इत्यादि। पुनश्च दूसरी बार शलाका विरलन देयराशि करते हैं उसकी संदृष्टि ऐसी १३ वि३ दे३। शलाकाराशि में से एक घटानेपर ऐसी ३-१, दो घटानेपर ऐसी ३-२ इत्यादि। पुनश्च तीसरी बार शलाकादिक की भी ऐसी ही संदृष्टि जाननी। ऐसा करने के पश्चात् वहां छह राशियां मिलते हैं, उनकी संदृष्टि धर्म, अधर्म, एक जीव, लोकाकाश के प्रदेश लोकप्रमाण हैं उनकी जुदी जुदी संदृष्टि ऐसी $\equiv$, इनसे असंख्यात गुणा अप्रतिष्ठित प्रत्येकों की ऐसी $\equiv ३$, इनसे असंख्यात लोकगुणे प्रतिष्ठित प्रत्येकों की ऐसी $\equiv ३ \equiv ३$ ।

पुनश्च शलाकात्रय निष्ठापन करने के पश्चात् पुनः चार राशियां और मिलते हैं। वहां संख्यात पत्यप्रमाण - कल्पप्रमाण कल्पकाल की ऐसी ५१।

[विशेषार्थ - १ कल्प = २० कोडाकोडीसागर। १ सागर = १० कोडाकोडी पत्य, इसलिये १ कल्प = २० को.को. X १० को. को. पत्य = संख्यात पत्य ५१], असंख्यातलोक मात्र स्थितिबंधप्रत्ययों की ऐसी $\equiv ३$, इनसे असंख्यातलोक गुणा अनुभागबंधअध्यवसाय स्थानों की ऐसी $\equiv ३ \equiv ३$, इनसे असंख्यातलोक गुणा योगों के उत्कृष्ट अविभागप्रतिच्छेदों की ऐसी जाननी - $\equiv ३ \equiv ३ \equiv ३$ ।

अनंत के कथन में पहली बार मिलायी हुयी छह राशियों में से सिध्दराशि की संदृष्टि ऐसी ३, निगोदराशि की ऐसी १३ $\equiv$ । यहां पृथ्वीकायिकादि, प्रत्येक वनस्पति और त्रस इन तीन राशियों को घटाने की संसारीराशि के आगे $\equiv$ ऐसी संदृष्टि जाननी। पुद्गलराशि की ऐसी १६ख, कालसमयराशि की ऐसी १६खख, आकाशप्रदेशराशि की ऐसी १६खखख, पुनश्च दूसरी बार मिलाये हुये धर्म, अधर्म के अगुरुलघुगुण के अविभागप्रतिच्छेद उनकी ऐसी खख संदृष्टि जाननी।

द्विरूपवर्गधारा आदि तीन धाराओं के कथन में स्थानों की संदृष्टि सामान्य कथन जैसी जाननी। मध्य के स्थानों के लिये बीच में बिंदी की संदृष्टि जाननी। आगे की स्थानरूप जो राशि उसके वर्गशलाका की संदृष्टि ऐसी ५ जाननी। अर्धच्छेद राशि की ऐसी छे जाननी। प्रथम मूल (वर्गमूल) की ऐसी जाननी मू१, घन की संदृष्टि तीन बार लिखने से जाननी।

द्विरूपवर्गधारा के स्थानों की संदृष्टि

[विशेषार्थ - मूल पुस्तक में अनेक जगह व और ० लिखा है कहांपर कौनसा अर्थ है उसे यहां लिखते हैं । पहली बार व लिखा है उसका अर्थ है जघन्य परीतासंख्यात की वर्गशलाका । आवली का अर्थ है जघन्य युक्तासंख्यात । आवली तक जहां जहां बिंदी लिखी है उसका अर्थ है संख्यात वर्गस्थान, आवली के पश्चात् और जघन्य युक्तानंत तक जहां जहां बिंदी लिखी है उसका अर्थ है असंख्यात वर्गस्थान और जघन्य युक्तानंत से केवलज्ञान तक जहां जहां बिंदी लिखी है उसका अर्थ है अनंतानंत वर्गस्थान । आवली के पश्चात् जो व लिखा है उसका अर्थ है पल्य की वर्गशलाका, और छे का अर्थ है पल्य का अर्धच्छेद । तथा मू१ का अर्थ है पल्य का प्रथम वर्गमूल । इसीप्रकार जहां जहां व, छे और मू१ लिखा है वे मू१ के आगेवाली राशि के व, छे और मू१ जानने ।]

संदृष्टि -

२	४	१६	२५६	६५	=	४२	=	१८	=	०	व	०	छे	०	मू१	जघन्य परीता	०	आवली	प्रतरावली
																संख्यात १६		२	४

०	व	०	छे	०	मू१	पल्य	०	सूच्यंगुल	प्रतरांगुल	०	जगत्श्रेणी	०	व	०	छे	०	मू१	जघन्य
						५		२	४		घनमूल							परीतानंत
																		२५६

०	जघन्ययुक्तानंत	जघन्यअनंतानंत	०	व	०	छे	०	मू१	जीवराशि	०	पुद्गलराशि	०	कालराशि
	जजुअ	जजुअव							१६		१६ख		१६खख

०	श्रेणीआकाश	प्रतराकाश	०	धर्म अधर्म के अगुरुलघु	०	एकजीव के अगुरुलघु	०	जघन्यज्ञान
	१६खखख	१६खखख		अविभाग प्रतिच्छेद खख		अविभाग प्रतिच्छेद खखख		खखखख

०	जघन्यक्षायिकलब्धि	०	व	०	छे	०	केवलज्ञान का आठवां मूल आदि	केवलज्ञान
	खखखखख						मू८।मू७।मू६।मू५।मू४।मू३।मू२।मू१	

द्विरूपघनधारा के स्थानों की संदृष्टि

[विशेषार्थ - जगत्श्रेणी के पहले जो बिंदी है वहां असंख्यात वर्गस्थान समझना, जगत्प्रतर के बाद जो बिंदी है वहां अनंतानंत अनंतानंत वर्गस्थान समझना।]

| ८ | ६४ | ४०९६ | २५६।६५ = | ६५ = १४२ = | ४२ = १९८ = | आवली घन | प्रतरावली घन | ० |

| ववव | ० | छेछेछे | ० | मू१मू१मू१ | पत्यघन | ० | घनांगुल | ० | जगत्श्रेणी | जगत्प्रतर | ० |

| ववव | ० | छेछेछे | ० | मू१मू१मू१ | जीवराशिघन | ० | ववव | ० | छेछेछे | ० | मू१मू१मू१ |

सर्व आकाश | ० | केवलज्ञान के द्वितीय मूल का घन |
(श्रेणी आकाश का घन) | ० | मूर।मूर।मूर

द्विरूपघनाघनधारा के स्थानों की संदृष्टि

[विशेषार्थ - लोकाकाश के पहले जो बिंदी है वहां असंख्यात वर्गस्थान जानना, अग्निकायिक गुणकारशलाका के पश्चात् जहां जहां बिंदी है, वहां वहां असंख्यात असंख्यात वर्गस्थान जानना तथा उत्कृष्ट योगस्थान अविभाग प्रतिच्छेद के पश्चात् जहां बिंदी है वहां अनंतानंत वर्गस्थान जानना ।]

| ८।८।८ | ० | लोकाकाश | ० | अग्निकायिक | ० | व | ० | छे | ० | मू१ | अग्निकायिकराशि |

| ० | व | ० | छे | ० | मू१ | अग्निकायिक | ० | व | ० | छे | ० | मू१ | अवधिविषय | ० | व | ० | छे |

| ० | मू१ | स्थितिबंधअध्यवसाय | ० | व | ० | छे | ० | मू१ | अनुभागबंधअध्यवसाय | ० | व | ० | छे |

| ० | मू१ | निगोद शरीर की उत्कृष्ट संख्या | ० | व | ० | छे | ० | मू१ | निगोद काय |

≡ ३ ≡ ३ ≡ ३ ≡ ३ ≡ ३

≡ ३ ≡ ३

≡ ३ ≡ ३

≡ ३ ≡ ३

स्थिति

| ० | व | ० | छे | ० | मू१ | उत्कृष्ट योगस्थान | ० | केवलज्ञान के चतुर्थ मूल का घनाघन |
 | अविभाग प्रतिच्छेद | अनंतानंत | मू ४।९ (चतुर्थमूल ९ बार) |

उपमामान - उपमाप्रमाण में गर्त (गह्वा) में चार एक आदि अंक प्रमाण रोम भरे हैं उनकी संदृष्टि ऐसी है $४१ =$ । पुनश्च दो बार संख्यात गुणित आवली मात्र व्यवहार पत्य की

ऐसी २११ । पुनश्च उद्धारपत्य की संदृष्टि ऐसी है $\overset{३}{\underset{१}{\text{विछेछे}}}$ कैसे? सो कहते हैं -
 $३।२५$ को २

श्रेणी के अर्धच्छेदों की संदृष्टि ऐसी विछेछे । इसके ऊपर तीन कम की संदृष्टि करनेपर

रज्जू (राजू) के अर्धच्छेदों की संदृष्टि ऐसी $\overset{३}{\underset{१}{\text{विछेछे}}}$ इसमें से संख्यात अधिक सूच्यंगुल के अर्धच्छेद घटाने के लिये यहां विरलनराशि गुण्य के आगे सूच्यंगुल के अर्धच्छेदों से त्रिगुणा गुणकार देखकर अपनयन त्रैराशिक द्वारा गुण्य विरलनराशि में से साधिक तीसरा

भाग घटानेपर समस्त द्वीपसमुद्रोंके संख्या की संदृष्टि ऐसी है $\overset{३}{\underset{१}{\text{विछेछे}}}$ यहां विरलनराशि

से लेकर एक तृतीयांश $\overset{१}{३}$ तक घटाने की ऐसी) संदृष्टि जाननी। इसको २५ कोडाकोडी

का भाग देनेपर उद्धारपत्य की संदृष्टि ऐसी $\overset{३}{\underset{१}{\text{विछेछे}}}$ सिद्ध होती है ।
 $३।२५$ को २

[विशेषार्थ - $\frac{\text{श्रेणी}}{७} = १$ राजू । श्रेणी के अर्धच्छेद - ७ के अर्धच्छेद = राजू के अर्धच्छेद

$\therefore २५$ कोडाकोडी उद्धारपत्य में $\overset{३}{\underset{१}{\text{विछेछे}}}$ रोमखंड

$\therefore १$ उद्धारपत्य में $\overset{३}{\underset{१}{\text{विछेछे}}}$ रोमखंड]
 $३।२५$ को २

पुनश्च अध्वापल्य आदि की तथा उनकी वर्गशलाका और अर्धच्छेदराशि की संदृष्टि सामान्योक्त जाननी ।

संदृष्टि

नाम	पल्य	सागर	सूच्यंगुल	प्रतरांगुल	घनांगुल	जगत्श्रेणी	जगत्प्रतर	लोक
प्रमाणकी	प	सा	२	४	६	—	=	≡
अर्धच्छेदकी	छे	छे १	छेछे	छेछे १२	छेछे १३	छेछेछे १३ ३	विछेछे १६	विछेछे १९
वर्गशलाकाकी	व	०	व २	$\frac{१}{व २}$	व २	$\frac{व}{१६ १२}$ व २	$\frac{१}{व}$ $\frac{१६ १२}{व २}$	$\frac{व}{१६ १२}$ व २

विशेषार्थ - यहां सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका पुस्तक में से पढ़कर इन संदृष्टियों का अर्थ जानना ।

जैसे जगत्श्रेणी के अर्धच्छेद छेछेछे १३ है यहां छे को वि जानना इसलिये जगत्प्रतर के अर्धच्छेद उससे दोगुणा विछेछे १६ होते हैं । सूच्यंगुल की वर्गशलाका व २ कहा उसे द्विरूपवर्गधारा में व २ जानना और घनांगुल की वर्गशलाका व २ कहा उसे द्विरूपघनधारा में व २ जानना । जगत्श्रेणी की वर्गशलाका ऐसी $\frac{व}{१६ १२}$ कही है उसमें ऊपर के

व का अर्थ है अध्वापल्य की वर्गशलाका । १६ का अर्थ है जघन्य परीतासंख्यात और नीचे व २ लिखा है उसका अर्थ है घनांगुल की वर्गशलाका । इसतरह जगत्श्रेणी की वर्गशलाका द्विरूपघनधारा में आती है । $(\frac{व}{१६ १२} + व २)$ इसीमें एक मिला देनेपर

जगत्श्रेणी का वर्ग जगत्प्रतर, उसकी वर्गशलाका ऐसी $\frac{१}{व}$ है, वह भी द्विरूपघनधारा में है ।

लोक तथा उसकी अर्धच्छेदराशि और वर्गशलाका द्विरूपघनाघनधारा में आते हैं ।

विरलन राशि X देयराशि के अर्धच्छेद = लब्धराशि के अर्धच्छेद ।

पल्य के अर्धच्छेद का असंख्यातवां भाग छे X घनांगुल के अर्धच्छेद छेछे ३ = छेछेछे ३

जगत्श्रेणी के अर्धच्छेद = विछेछे३ ।

वर्गशलाका = अर्धच्छेद के अर्धच्छेद ।

विरलनराशि के अर्धच्छेद + देयराशि के अर्धच्छेद के अर्धच्छेद (घनांगुल की वर्गशलाका)
= लब्धराशि के अर्धच्छेद

$$\overset{व}{१६।२} + व२ = \frac{\overset{व}{१६।२}}{\overset{व}{२}} \text{ जगत्श्रेणी की वर्गशलाका }]$$

वहां जगत्श्रेणी की वर्गशलाका के प्रमाण में इतना विशेष जानना । अध्दापल्य के अर्धच्छेदराशि के वर्गमूल दूणे जघन्य परीतासंख्यात के अर्धच्छेद प्रमाण क्रम से करना । वहां पल्य के अर्धच्छेदराशि के अर्धच्छेद पल्य की वर्गशलाका मात्र, उनकी संदृष्टि ऐसी छेव । पुनश्च पल्य के अर्धच्छेदराशि के प्रथम मूल के अर्धच्छेद पल्य की वर्गशलाका से आधे, उसकी संदृष्टि ऐसी मू१व_२; ऐसे आधे आधे होते हुये उपांत वर्गमूल के अर्धच्छेद पल्य की वर्गशलाका को जघन्यपरीतासंख्यात का भाग देनेपर जो प्रमाण हो उतने जानने । अंतमूल के अर्धच्छेद इनसे आधे जानना ।

छे ।	व
मू१ ।	व _२
मू२ ।	व _{२।२}
मू२ ।	व _{२।२।२}
० ० ।	० ०
मू ।	व _{१६}
मू ।	व _{१६।२}

$$[\text{छे} = \text{अर्धच्छेद}$$

$$व = \text{वर्गशलाका} = \text{अर्धच्छेद के अर्धच्छेद}]$$

सो अंतमूल के अर्धच्छेद प्रमाण दो को परस्पर गुणा करनेपर जो पल्य के अर्धच्छेदों के असंख्यातवें भागमात्र प्रमाण आता है वही जगत्श्रेणी में विरलनराशि है । इस विरलनराशि के अर्धच्छेद दोगुणा परीतासंख्यात से भाजित पल्य की वर्गशलाका मात्र, उसको देयराशि घनांगुल उसकी वर्गशलाका में जोड़नेपर जगत्श्रेणी की वर्गशलाका होती है । इसलिये

जगत्श्रेणी की वर्गशलाका की संदृष्टि पूर्वोक्त जाननी । अन्य भी मान के कथन में यथासंभव संदृष्टि जाननी ।

पर्याप्तिप्ररूपणा में उनका काल ऐसा जानना -

आहारपर्याप्ति का काल छोटा अंतर्मुहूर्तमात्र ऐसा २१, इसको संख्यात की संदृष्टि चार के अंक का भाग देनेपर एक भाग ऐसा २१ इन दोनों को २१ और २१ को मिलानेपर शरीरपर्याप्ति का काल ऐसा २१।५ । यहां समच्छेद द्वारा एक अधिक भागहार के प्रमाण से गुणित करके सम्पूर्ण भागहार का भाग देनेपर एक भाग का मिलाना जानना ।

$$\left[\text{विशेषार्थ} - २१ + \frac{२१}{४} = \frac{४ \times २१}{४} + \frac{२१}{४} = \frac{२१ \times ५}{४} \right]$$

पुनश्च उस एक भाग का संख्यातवां भाग ऐसा २१ और पहले दो ऐसे २१ + २१ (२१।५) उनको समच्छेद द्वारा जोड़नेपर इन्द्रियपर्याप्ति का काल ऐसा २१।५।५ । ऐसे ही मनःपर्याप्ति पर्यंत जानना । उनका यंत्र -

					जोड़ २१५५५५ ४।४।४।४।४
				जोड़ २१५५५ ४।४।४।४	२१ ४।४।४।४।४
			जोड़ २१५५ ४।४।४	२१ ४।४।४।४	२१ ४।४।४।४
		जोड़ २१५ ४।४	२१ ४।४।४	२१ ४।४।४	२१ ४।४।४
जोड़ २१ ४	२१ ४	२१ ४	२१ ४	२१ ४	२१ ४
२१	२१	२१	२१	२१	२१
आहारपर्याप्ति	शरीर प.	इन्द्रिय प.	उच्छ्वास प.	भाषा प.	मनः प.

पुनश्च त्रैराशिक के कथन में प्रमाण, फल, इच्छा की संदृष्टि सर्वत्र आदि अक्षररूप जाननी - प्र, फ, इ, लब्ध । उनका जैसा जहां प्रमाण हो, वैसा वहां जानना ।

प्राण अधिकार में विशेष संदृष्टि है नहीं ।

संज्ञा अधिकार में विशेष संदृष्टि है नहीं ।

मार्गणा महाअधिकार में **गतिमार्गणा अधिकार** में संदृष्टि कहते हैं -

जहां जीवों की संख्या का वर्णन है, वहां सामान्य सर्व नारकियों के प्रमाण की संदृष्टि ऐसी - **२मू** [जगत्श्रेणी X घनांगुल का द्वितीय वर्गमूल] यहां जगत्श्रेणी की संदृष्टि ऐसी - उसके आगे घनांगुल के द्वितीय वर्गमूल के गुणकार की संदृष्टि ऐसी **२मू** जाननी ।

वहां द्वितीयादि पृथ्वियों में नारकियों के प्रमाण की संख्या क्रम से ऐसी **१२।१०।८।६।३।२** यहां जगत्श्रेणी की संदृष्टि ऐसी -, उसके नीचे इस जगत्श्रेणी ही के बारहवें, दसवें, आठवें, छठवें, तीसरे, दूसरे वर्गमूल के भागहार की संदृष्टि

जाननी । पुनश्च इन छहों के जोड़ की संदृष्टि ऐसी $-\overset{1}{9}_2$ यहां जगत्श्रेणी - को एक से गुणित करके इसीके बारहवें वर्गमूल का भागहार $-\overset{1}{9}_2$ देकर अन्य को मिलाने के अर्थ उसके ऊपर साधिक की ऐसी । संदृष्टि जाननी । पुनश्च इसको सामान्य नारकियों

के प्रमाण में से घटानेपर धर्मा नारकियों के प्रमाण की संदृष्टि ऐसी - **२मू** $-\overset{1}{9}_2$ यहां सामान्य नारकियों का प्रमाण ऐसा - **२मू** उसके आगे गुणकार में घटाने की संदृष्टि संयुक्त छहों नारकियों के प्रमाण की संदृष्टि जाननी ।

[विशेषार्थ - सातों पृथ्वियों के नारकी (सामान्य नारकी) = जगत्श्रेणी X घनांगुल का द्वितीय वर्गमूल **-२मू**

दूसरी पृथ्वी के नारकी $\longrightarrow$ जगत्श्रेणी $\div$ जगत्श्रेणी का बारहवां वर्गमूल **१२**

तीसरी पृथ्वी के नारकी $\longrightarrow$ जगत्श्रेणी $\div$ जगत्श्रेणी का दसवां वर्गमूल **१०**

दूसरे से सातवें तक के नारकी $\longrightarrow$ साधिक **१२** $\longrightarrow$ $-\overset{1}{9}_2$

पहली पृथ्वी के नारकी $\rightarrow -२मू \curvearrowright -\overset{1}{9}_2]$

यहां अपनयन त्रैराशिक में प्रमाणराशि जगत्श्रेणी प्र-, फलराशि १, इच्छाराशि छहों पृथ्वियों का जोड़ $-\overset{1}{9}_2$, लब्धराशि साधिक बारहवां वर्गमूलमात्र जगत्श्रेणी का भाग $\overset{1}{9}_2$ गुणकार २मू में कम जानना ।

तिर्यचगति में सामान्य सर्व तिर्यचों की संदृष्टि ऐसी १३ $\equiv$ । यहां संसारीराशि १३ के आगे नारक, मनुष्य, देव इन तीन राशियों को घटाने की ऐसी $\equiv$ संदृष्टि जाननी। पुनश्च पंचेन्द्रिय तिर्यचराशि की संदृष्टि ऐसी $\overset{5}{8}1816469$ यहां आगे इन्द्रियमार्गणा $\equiv$

में पंचेन्द्रिय जीवों के प्रमाण की संदृष्टि कहेंगे । उसमें से तीन गतियों के जीव घटाने की आगे ऐसी $\equiv$ संदृष्टि जाननी। पुनश्च पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यचराशि की संदृष्टि ऐसी $\overset{5}{8}1816469$ यहां भी आगे पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यचराशि की संदृष्टि लिखेंगे । उसमें $\equiv$

से तीन गतियों के जीव घटाने की ऐसी $\equiv$ संदृष्टि जाननी।

पुनश्च योनिमत् तिर्यच राशि की संदृष्टि ऐसी $\overline{8}164=12918190$ यहां छह सौ योजन के वर्ग के प्रतरांगुल करनेपर पण्टी को इक्यासी और चार से गुणा करके आगे दस बिंदी देते हैं इतना होता है, उसका भाग जगत्प्रतर को जानना । यहां ऊपर जगत्प्रतर की संदृष्टि ऐसी $=$, उसके नीचे प्रतरांगुल की ऐसी ४, पण्टी की ऐसी ६५ $=$, आगे इक्यासी और चार के गुणकार की ऐसी ८१४, आगे दस बिंदियों की ऐसी १० जाननी ।

पुनश्च अपर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यच राशि की संदृष्टि ऐसी $\overset{5}{8}16415 \equiv$ है ।
 $\overset{5}{8}16415 \equiv$
 $\overset{5}{8}16415 \equiv$

यहां भी आगे अपर्याप्त पंचेन्द्रिय की संदृष्टि लिखेंगे । उसमें ऋणराशि और धनराशि में तीन गतियों के जीव घटाने की ऐसी $\equiv$ संदृष्टि जाननी।

विशेषार्थ - पंचेन्द्रिय तिर्यच $\begin{smallmatrix} = ५८३६ \\ ४।४।६५६९ \\ ७ \end{smallmatrix}$ अर्थात् $\begin{smallmatrix} = ५८३६।७ \\ ४।४।६५६९ \end{smallmatrix}$

पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यच $\begin{smallmatrix} = ५८६४ \\ ४।४।६५६९ \\ ५ \end{smallmatrix}$ अर्थात् $\begin{smallmatrix} = ५८६४।५ \\ ४।४।६५६९ \end{smallmatrix}$

पंचेन्द्रिय तिर्यच - पर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यच = अपर्याप्त पंचेन्द्रिय तिर्यच

$\begin{smallmatrix} = ५८६४।५ \\ = ५८३६।७ \\ ४।४।६५६९ \end{smallmatrix}$

]

पुनश्च मनुष्यगति में सामान्य मनुष्यराशि की संदृष्टि ऐसी $\frac{१८}{१।३}$ । यहां जगत्श्रेणी — के नीचे सूच्यंगुल का प्रथम, तृतीय वर्गमूल ऐसा १।३ उसका भाग जानना और ऊपर लब्धराशि में एक कम जानना $\frac{१८}{१।३}$ ।

पुनश्च पर्याप्त मनुष्यराशि की संदृष्टि ऐसी $४२=१४२=१४२=$ यह बादल का घन जानना । इसको तीन से गुणा करके चार का भाग देनेपर योनिमत् मनुष्यराशि की संदृष्टि ऐसी $४२=१४२=१४२=१३$ तथा अपर्याप्त मनुष्यराशि की संदृष्टि ऐसी

$\frac{१८}{१।३}-१$ । यहां समान्य मनुष्यराशि के आगे संख्यात पर्याप्त मनुष्य घटाने की ऐसी -१ संदृष्टि जाननी ।

पुनश्च देवगति में व्यंतरराशि की संदृष्टि ऐसी $\overline{४।६५}=१८१।१०$ यहां जगत्प्रतर = को तीन सौ योजन के वर्ग के जितने प्रतरांगुल होते हैं अर्थात् इक्यासी ८१ गुणित पण्टी ६५= के आगे दस बिंदी १० देनेपर जो प्रमाण हो उतने प्रतरांगुल ४ का भाग जानना ।

पुनश्च ज्योतिष्कराशि की संदृष्टि ऐसी $\overline{४।६५}=$ यहां जगत्प्रतर = को पण्टी ६५= प्रमाण प्रतरांगुल ४ का भाग जानना । पुनश्च भवनवासी राशि की संदृष्टि ऐसी -१ । यहां जगत्श्रेणी — को घनांगुल के प्रथम मूल १ का गुणकार जानना । सौधर्मयुगल में देवराशि की संदृष्टि ऐसी -३ , यहां जगत्श्रेणी — को घनांगुल के तृतीय वर्गमूल ३ का गुणकार जानना ।

सनत्कुमार माहेन्द्र युगल आदि पांच युगलों में देवराशि की क्रम से संदृष्टि ऐसी ११, ९, ७, ५, ३ । यहां जगत्श्रेणी — को क्रम से इसी जगत्श्रेणी के ग्यारहवें, नौवें, सातवें, पांचवें, चौथे वर्गमूल का भाग जानना ।

आनतादि दो युगल और अधस्तन, मध्यम, उपरितन त्रैवेयक और अनुदिश विमान तथा अनुत्तर विमान इन सात स्थानों में प्रत्येक में पत्य के असंख्यातवें भाग मात्र देव हैं, उनकी संदृष्टि ऐसी ५ ।

यहां कल्पवासी देवों के प्रमाण की रचना निम्नानुसार है -

यहां पहले, दूसरे, सातवें, आठवें युगल में दो दो इन्द्र संबंधी देवों का प्रमाण है वहां दो बार एक की संदृष्टि है । तीसरे, चौथे, पांचवें युगल में एक एक इन्द्र है वहां एक बार एक और एक बार बिंदी की संदृष्टि है । तीन-तीन अधः, मध्य, उपरिम त्रैवेयकों संबंधी ऐसी ३, नौ अनुदिश संबंधी ऐसी ९, पांच अनुत्तर संबंधी ऐसी ५ संदृष्टि जाननी ।

नाम और संदृष्टि	संख्या की संदृष्टि
अनुत्तर	५
अनुदिश	९
उपरिमत्रैवेयक	३
मध्यत्रैवेयक	३
अधोत्रैवेयक	३
आरण-अच्युत	१।१
आनत-प्राणत	१।१
शतार-सहस्रार	१।०
शुक्र-महाशुक्र	१।०
लांतव-कापिष्ठ	०।१
ब्रह्म-ब्रह्मोत्तर	०।१
सनत्कुमार-माहेन्द्र	१।१
सौधर्म-ईशान	१।१

सर्वार्थसिद्धि के देवराशि की संदृष्टि ऐसी $४२=१४२=१४२=१३।३$ या ७ है।
यहां मनुष्यणी के प्रमाण के आगे तीन या सात का गुणकार जानना ।

सर्व देवराशि की संदृष्टि ऐसी $\overline{४}।६५=\frac{११}{९}$ । यहां ज्योतिष्कराशि ऐसी $\overline{४}।६५=$
और इसके संख्यातवें भागप्रमाण व्यंतराशि है उसको मिलाने के लिये ज्योतिष्कराशि
के आगे एक के संख्यातवें भाग से अधिक एक ऐसा $\frac{१}{९}$ उसका गुणकार करनेपर
व्यंतराशि सहित ज्योतिष्क राशि ऐसी $\overline{४}।६५=\frac{११}{९}$ । इसके ऊपर भवनवासी और कल्पवासी
ये दो राशियां मिलाने के लिये ऊपर दो ऊभी लीक (रेषा) की ऐसी ॥ संदृष्टि करनेपर
सम्पूर्ण देवराशि की संदृष्टि होती है ।

अब इन्द्रियमार्गणा में संदृष्टि कहते हैं -

वहां निर्वृत्तिरूप द्रव्येन्द्रियों की अवगाहना में चक्षुइन्द्रिय की अवगाहना ऐसी $\frac{६।५}{९।११।९}$
यहां घनांगुल ६ को पत्य के असंख्यातवें भाग $\frac{५}{९}$ का गुणकार जानना तथा पत्य के
असंख्यातवें भाग $\frac{५}{९}$ का और संख्यात १ का और संख्यात १ का और एक अधिक
पत्य के असंख्यातवें भाग $\frac{१}{९}$ का भागहार जानना । इससे संख्यातगुणा श्रोत्रइन्द्रिय की
अवगाहना है वहां संख्यात के गुणकार और भागहार का अपवर्तन करनेपर ऐसी संदृष्टि
होती है $\frac{६।५}{९।११।९}$ । पुनश्च इसको पत्य के असंख्यातवें भाग का भाग देकर एक
भाग से अधिक घ्राणेन्द्रिय की अवगाहना है । वहां पत्य के असंख्यातवें भाग का
भागहार और इससे एक अधिक का गुणकार हुआ उसका अपवर्तन करनेपर ऐसी $\frac{६}{९।११}$
संदृष्टि होती है । पुनश्च इससे पत्य के असंख्यातवें भाग गुणा जिह्वाइन्द्रिय की अवगाहना

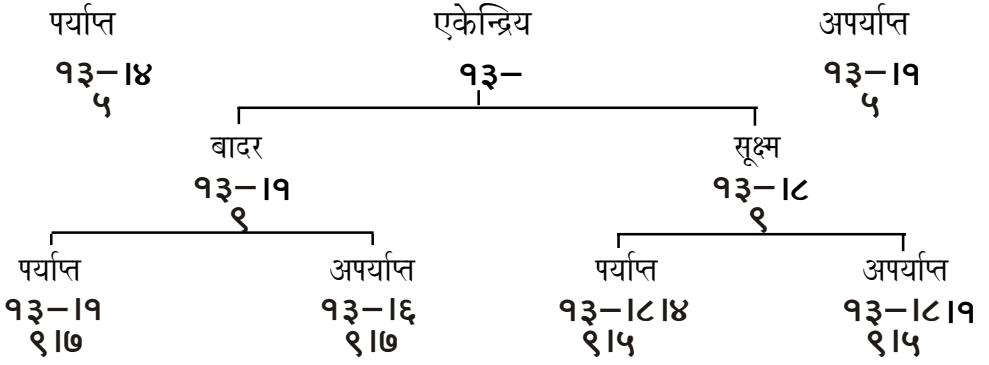
स्पर्शनइन्द्रिय की जघन्य अवगाहना (सूक्ष्म निगोद लब्धि अपर्याप्त की जघन्य

ऐसी **दृग्दृग्दृग्** है । यहां जीवसमास अधिकार में शरीर की जघन्य-उत्कृष्ट अवगाहना का जो प्रमाण कहा था वही जानना ।

93-121
9

एक भाग मात्र पर्याप्त राशि की ऐसी १३-१९ है ।
९।७

अपर्याप्तराशि की ऐसी १३-१८ संदृष्टि जाननी ।
९१५



पुनश्च सामान्य त्रसराशि की संदृष्टि ऐसी $\frac{१३}{९}$ यहां प्रतरांगुल के असंख्यातवें भाग का भाग जगत्प्रतर को जानना । पुनश्च इसको आवली के असंख्यातवें भाग की संदृष्टि यहां नौ का अंक, उसका भाग देकर बहुभाग ऐसा $\frac{१३}{९} \times ९ = १३$ इसको चार का भाग देनेपर ऐसा $\frac{१३}{९} \times ४ = ५।३३$ एक एक समान भाग द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय, पंचेन्द्रिय को देना। अवशेष एक भाग रहा ऐसा $\frac{१३}{९}$ उसको आवली के असंख्यातवां भागमात्र प्रतिभाग ऐसा ९ उसका भाग देकर बहुभाग ऐसा $\frac{१३}{९} \times ९ = १३$ द्वीन्द्रिय को देना, अवशेष एकभाग ऐसा $\frac{१३}{९}$ उसको उसी प्रतिभाग का भाग देकर बहुभाग ऐसा $\frac{१३}{९} \times ९ = १३$ त्रीन्द्रिय को देना । पुनश्च अवशेष एक भाग ऐसा $\frac{१३}{९}$ उसको उसी प्रतिभाग का भाग देकर बहुभाग ऐसा $\frac{१३}{९} \times ९ = १३$ चतुरिन्द्रिय को देना । पुनश्च अवशेष एक भाग ऐसा $\frac{१३}{९}$ पंचेन्द्रिय को देना। इसप्रकार बहुभाग के चार समान भाग ऊपर स्थापित करना, पश्चात् उसमें दिये हुये देयभाग नीचे स्थापित करना।

नाम	द्वीन्द्रिय	त्रीन्द्रिय	चतुरिन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
समभाग	$\frac{१३}{९}$	$\frac{१३}{९}$	$\frac{१३}{९}$	$\frac{१३}{९}$
देयभाग	$\frac{१३}{९}$	$\frac{१३}{९}$	$\frac{१३}{९}$	$\frac{१३}{९}$

यहां अंकों का परस्पर समच्छेद करनेपर समभाग, देयभाग ऐसे होते हैं - कैसे उसे कहते हैं -

नाम	द्वीन्द्रिय	त्रीन्द्रिय	चतुरिन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
समभाग	$\frac{=12191919}{81819191919}$	$\frac{=12191919}{81819191919}$	$\frac{=12191919}{81819191919}$	$\frac{=12191919}{81819191919}$
देयभाग	$\frac{=12181919}{81819191919}$	$\frac{=121819}{81819191919}$	$\frac{=1218}{81819191919}$	$\frac{=918}{81819191919}$

सबसे अधिक देयभाग के भागहार में चार बार नौ के अंक हैं और समभाग के भागहार में एक बार नौ का अंक है । इसलिये सर्वत्र भागहार में चार बार नौ का अंक करने के लिये समभाग में तीन बार नौ के अंक का गुणकार और भागहार लिखा । पुनश्च देयराशि के भागहार में चार का अंक है नहीं परंतु समभाग के भागहार में चार का अंक है । इसलिये समच्छेद करने के लिये सर्वत्र देयराशि में चार का गुणकार और भागहार किया । पुनश्च सर्वत्र चार बार नौ के अंक का भागहार करना और द्वीन्द्रिय की देयराशि में दो बार नौ के अंक का भागहार है इसलिये वहां दो बार नौ के अंक का गुणकार और भागहार किया ।

त्रीन्द्रिय की देयराशि में तीन बार नौ के अंक का भागहार है, इसलिये वहां एक बार नौ के अंक का गुणकार और भागहार किया । चतुरिन्द्रिय और पंचेन्द्रिय की देयराशि में चार बार नौ का भागहार है ही, इसलिये वहां गुणकार भागहार नहीं किया, ऐसा यह समच्छेद जानना ।

पुनश्च समभाग का गुणकार आठ और तीन बार नौ का अंक (८१९१९१९) इनको परस्पर गुणा करनेपर अट्ठावन सौ बत्तीस होते हैं और देयराशि के गुणकार में द्वीन्द्रिय के आठ, चार, नौ, नौ को परस्पर गुणा करनेपर पच्चीस सौ बानबे होते हैं । त्रीन्द्रिय के आठ, चार, नौ को परस्पर गुणा करनेपर दो सौ अट्ठासी होते हैं, चतुरिन्द्रिय के आठ, चार को परस्पर गुणा करनेपर बत्तीस होते हैं । पंचेन्द्रिय के चार ही है । पुनश्च भागहार में सर्वत्र चार के गुणकार को जुदा रखकर चार बार नौ के अंकों को परस्पर गुणा करनेपर पैसठ सौ इकसठ होते हैं । ऐसा करनेपर समभाग, देयभाग ऐसे हुये -

नाम	द्वीन्द्रिय	त्रीन्द्रिय	चतुरिन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
समभाग	$\frac{=1५८३२}{४।४।६५६९}$	$\frac{=1५८३२}{४।४।६५६९}$	$\frac{=1५८३२}{४।४।६५६९}$	$\frac{=1५८३२}{४।४।६५६९}$
देयभाग	$\frac{=1२५९२}{४।४।६५६९}$	$\frac{=1२८८}{४।४।६५६९}$	$\frac{=1३२}{४।४।६५६९}$	$\frac{=1४}{४।४।६५६९}$

इन समभागों और देयभागों को जोड़नेपर द्वीन्द्रिय आदि जीवों के प्रमाण की संदृष्टि ऐसी होती है -

नाम	द्वीन्द्रिय	त्रीन्द्रिय	चतुरिन्द्रिय	पंचेन्द्रिय
प्रमाण	$\frac{=1८४२४}{४।४।६५६९}$	$\frac{=1६९२०}{४।४।६५६९}$	$\frac{=1५८६४}{४।४।६५६९}$	$\frac{=1५८३६}{४।४।६५६९}$

पुनश्च पर्याप्त त्रस जीवों का प्रमाण ऐसा $\frac{८}{५}$ यहां संख्यात की संदृष्टि पांच का अंक, उससे भाजित प्रतरांगुल का भाग जगत्प्रतर को जानना । वहां पूर्वोक्त प्रकार से प्रतिभाग $\left[९ = \text{आवली का असंख्यातवां भाग} \right]$ का भाग देकर बहुभाग में चार समान भाग करके त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, पंचेन्द्रिय, चतुरिन्द्रिय को देना और एक भाग के बहुभाग मात्र क्रम से त्रीन्द्रिय, द्वीन्द्रिय, पंचेन्द्रिय को देना, एक भाग चतुरिन्द्रिय को देना। उनकी संदृष्टि ऐसी होती है -

यंत्र क्र. १ -

नाम	त्रीन्द्रिय	द्वीन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	चतुरिन्द्रिय
समभाग	$\frac{=८}{४।९।४}$	$\frac{=८}{४।९।४}$	$\frac{=८}{४।९।४}$	$\frac{=८}{४।९।४}$
देयभाग	$\frac{=८}{४।९।९}$	$\frac{=८}{४।९।९।९}$	$\frac{=८}{४।९।९।९।९}$	$\frac{=९}{४।९।९।९।९}$

[यंत्र क्र. २ और यंत्र क्र. ३ मूल पुस्तक में नहीं है, सीधा यंत्र क्र. ४ दिया है। वह कैसे आया समझने के लिये यहां दिखाया है । इनको पूर्वोक्त प्रकार से समच्छेद

करके मिलानेपर पर्याप्त जीवों के प्रमाण की संदृष्टि ऐसी होती है -

यंत्र क्र. २ -

नाम	त्रीन्द्रिय	द्वीन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	चतुरिन्द्रिय
समभाग	$\frac{=1८1९1९1९}{४1४1९1९1९1९}$ ५	$\frac{=1८1९1९1९}{४1४1९1९1९1९}$ ५	$\frac{=1८1९1९1९}{४1४1९1९1९1९}$ ५	$\frac{=1८1९1९1९}{४1४1९1९1९1९}$ ५
देयभाग	$\frac{=1८1४1९1९}{४1४1९1९1९1९}$ ५	$\frac{=1८1४1९}{४1४1९1९1९1९}$ ५	$\frac{=1८1४}{४1४1९1९1९1९}$ ५	$\frac{=1४}{४1४1९1९1९1९}$ ५

यंत्र क्र. ३ -

नाम	त्रीन्द्रिय	द्वीन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	चतुरिन्द्रिय
समभाग	$\frac{=1५८३२}{४1४1६५६९}$ ५	$\frac{=1५८३२}{४1४1६५६९}$ ५	$\frac{=1५८३२}{४1४1६५६९}$ ५	$\frac{=1५८३२}{४1४1६५६९}$ ५
देयभाग	$\frac{=1२५९२}{४1४1६५६९}$ ५	$\frac{=1२८८}{४1४1६५६९}$ ५	$\frac{=1३२}{४1४1६५६९}$ ५	$\frac{=1४}{४1४1६५६९}$ ५

यंत्र क्र. ४ - [त्रस पर्याप्तों की संख्या]

नाम	त्रीन्द्रिय	द्वीन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	चतुरिन्द्रिय
प्रमाण	$\frac{=1८४२४}{४1४1६५६९}$ ५	$\frac{=1६९२०}{४1४1६५६९}$ ५	$\frac{=1५८६४}{४1४1६५६९}$ ५	$\frac{=1५८३६}{४1४1६५६९}$ ५

पुनश्च पूर्वोक्त सामान्य त्रस जीवों के प्रमाण में से इस पर्याप्त जीवों के प्रमाण को घटानेपर अपर्याप्त जीवों के प्रमाण की संदृष्टि ऐसी होती है -

नाम	त्रीन्द्रिय	द्वीन्द्रिय	पंचेन्द्रिय	चतुरिन्द्रिय
प्रमाण	$\frac{६९२०1५}{=८४२४1७}$ ४1४1६५६९	$\frac{८४२४1५}{=६९२०1७}$ ४1४1६५६९	$\frac{५८३६1५}{=५८६४1७}$ ४1४1६५६९	$\frac{५८६४1५}{=५८३६1७}$ ४1४1६५६९

यहां सामान्यराशि से तो मूलराशि और पर्याप्तराशि से ऋणराशि इन दोनों में $\frac{=४1४1६५६९}{४1४1६५६९}$ अर्थात् जगत्प्रतर को प्रतरांगुल और चौगुणा पैसठ सौ इकसठ का

भाग समान देखकर मूलराशि का गुणकार लिखकर उसमें से ऋणराशि का गुणकार घटाने के लिये ऋणराशि ऊपर लिखकर उसे घटाने की संदृष्टि ऊपर बिंदी की है । पुनश्च भागहार का भागहार भाज्य का गुणकार होता है इस न्याय से मूलराशि में भागहार प्रतरांगुल का भागहार असंख्यात था, उसको मूलराशि के गुणकार का गुणकार किया और ऋणराशि में पांच का अंक था उसको ऋणराशि के गुणकार का गुणकार किया है ।

अब कायमार्गणा अधिकार में संदृष्टि कहते हैं -

वहां बादर, सूक्ष्म पृथ्वी आदि चार कायिक जीवों का शरीर घनांगुल के असंख्यातवें भागमात्र कहा है । वहां सूक्ष्म पृथ्वीकायिक अपर्याप्त के जघन्य शरीर अवगाहना की

ऐसी $\frac{६।८।२२}{९।१९।८।५।८।२२।१।९}$ । और बादर पृथ्वीकायिक पर्याप्त की उत्कृष्ट अवगाहना

की ऐसी $\frac{६।८।४}{९।४।८।४।१।९}$ । इत्यादि जीवसमासोक्त संदृष्टि जाननी । पुनश्च प्रतिष्ठित

शरीरों का प्रमाण लाने के लिये प्रमाणराशि प्रतिष्ठित की उत्कृष्ट अवगाहना जीवसमासोक्त ऐसी $\frac{६}{९।२।१।९}$, फलराशि १, इच्छाराशि संख्यात घनांगुल प्रमाण एक स्कंध ६१;

वहां लब्धराशि दो बार पल्य के असंख्यातवें भाग को दस बार संख्यात से गुणा करनेपर जो प्रमाण हो $\frac{९।२।१।९०}{९।२।१।९०}$, उतना एक स्कंध में प्रतिष्ठित शरीरों का प्रमाण जानना ।

[विशेषार्थ - ∴ $\frac{६}{९।२।१।९}$ में १ शरीर

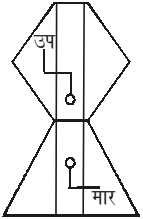
$$\therefore ६१ \text{ (स्कंध की अवगाहना) में } ६१ \times \frac{१}{\frac{६}{९।२।१।९}} = \frac{९।२।१।९०}{९।२।१।९}$$

पुनश्च निगोद कथन में असंख्यात लोकप्रमाण स्कंधों की संदृष्टि ऐसी $\equiv ९$ इसको क्रम से असंख्यात लोक से गुणा करनेपर अंडर, आवास, पुलवी, शरीर इनके प्रमाण की संदृष्टि ऐसी होती है - स्कंध $\equiv ९$, अंडर $\equiv ९ \equiv ९$, आवास $\equiv ९ \equiv ९ \equiv ९$, पुलवी $\equiv ९ \equiv ९ \equiv ९ \equiv ९$, शरीर $\equiv ९ \equiv ९ \equiv ९ \equiv ९ \equiv ९$ ।

पुनश्च प्रमाणराशि सर्व निगोद शरीरों का प्रमाण ऐसा $\equiv \ominus \equiv \ominus \equiv \ominus \equiv \ominus$,
 फलराशी वक्ष्यमाण बादर निगोद जीव प्रमाण ऐसा $\overset{१३-}{९}$, इच्छाराशि एक करनेपर लब्धराशि
 मात्र एक बादर निगोद शरीर में जीवों का प्रमाण ऐसा $\overset{१३-}{९} \equiv \ominus \equiv \ominus \equiv \ominus \equiv \ominus$ जानना।

पुनश्च प्रमाणराशि एक समय और फलराशि एक समय में निगोद में जीव उपजने
 का प्रमाण असंख्यात लोक मात्र ऐसा $\equiv \ominus$ और इच्छाराशि जीवों का इतर निगोद में
 रहने का उत्कृष्ट काल अढ़ाई पुद्गल परावर्तन मात्र काल ऐसा पु५_2 । वहां लब्धराशि
 मात्र इतर निगोद के जीवों का प्रमाण ऐसा होता है $\text{पु५}_2 \equiv \ominus$ ।

पुनश्च उपपाद मारणांतिकवाले का त्रसनाली के बाह्य अस्तित्व पाया जाता है।
 वहां संदृष्टि ऐसी -



यहां लोक का आकार करके बीच में त्रसनाली के आकार द्वारा उपपादवाले
 और मारणांतिकवाले का त्रसनाली के अभ्यंतर और बाह्य में प्रदेशों
 की श्रेणी के आकार की संदृष्टि जाननी ।

पुनश्च जीवों की संख्या में असंख्यात लोकमात्र अग्निकायिक की संदृष्टि ऐसी
 $\equiv \ominus$ । उसको प्रतिभाग का प्रमाण यथायोग्य असंख्यात लोकमात्र उसकी संदृष्टि नौ
 का अंक उसका भाग देकर एक भाग ऐसा $\equiv \overset{९}{१}$, उसीमें समच्छेद करके मिलानेपर
 पृथ्वीकायिकराशि की संदृष्टि ऐसी $\equiv \overset{९}{१} १०$ यहां एक अधिक भागहार से गुणा करके
 पूर्ण भागहार का भाग देनेपर एक भाग के मिलाने की संदृष्टि जाननी । इसीप्रकार उसको
 प्रतिभाग का भाग देकर एक भाग ऐसा $\equiv \overset{९}{१} १० १९$ उसीमें मिलानेपर अप्कायिक (जलकायिक)
 जीवों की संदृष्टि ऐसी $\equiv \overset{९}{१} १० १९ ०$ । पुनश्च इसको प्रतिभाग का भाग देनेपर एक
 भाग ऐसा $\equiv \overset{९}{१} १० १९ ० १९$ उसीमें मिलानेपर वायुकायिकराशि की संदृष्टि ऐसी
 $\overset{९}{१} १९ १९$

≡ ९।१०।१०।१०। पुनश्च अप्रतिष्ठितप्रत्येक यथायोग्य असंख्यात लोकमात्र उसकी संदृष्टि ९।९।९

ऐसी ≡ ९, इनसे असंख्यात लोक गुणा प्रतिष्ठितप्रत्येकों की ऐसी ≡ ९≡ ९ इन दोनों को मिलानेपर प्रत्येक वनस्पतिकायिक की ऐसी ≡ ९^१≡ ९ । यहां असंख्यात लोक को दोनों में समान देखकर आगे के असंख्यात लोक के गुणकार के ऊपर एक अधिक की संदृष्टि जाननी ।

$$\left[\begin{array}{l} \text{अप्रतिष्ठितप्रत्येक} + \text{प्रतिष्ठितप्रत्येक} \longrightarrow \text{प्रत्येक वनस्पति} \\ \equiv ९ \quad + \quad \equiv ९ \equiv ९ \longrightarrow \equiv ९^१ \equiv ९ \end{array} \right]$$

पुनश्च आगे कहेंगे त्रसराशि ऐसी = $\begin{bmatrix} ४ \\ २ \\ ९ \end{bmatrix}$ जगतप्रतर प्रतरागुल आवली असंख्यात और पृथ्वी आदि चार का

प्रमाण जोड़नेपर साधिक चौगुणा तेजकायिक राशि मात्र ऐसा ≡ ९^४ और प्रत्येक वनस्पतिकायिक राशि ऐसी ≡ ९^१≡ ९ । इन तीनों राशियों को संसारीराशि में से घटानेपर साधारणराशि का प्रमाण ऐसा १३≡, यहां संसारीराशि १३ के आगे तीन राशि घटाने की ऐसी ≡ संदृष्टि जाननी । पुनश्च जो पृथ्वीकायिक आदि का प्रमाण कहा उसको असंख्यात लोक की संदृष्टि नौ का अंक उसका भाग देकर एक भाग मात्र बादर जीवों का प्रमाण है । वहां अपनी अपनी सामान्यराशि को नौ का भाग देनेपर संदृष्टि होती है ।

पुनश्च अवशेष बहुभाग मात्र सूक्ष्म है । वहां अपनी अपनी सामान्यराशि को आठ से गुणा करके नौ का भाग देनेपर संदृष्टि होती है । पुनश्च अपने अपने सूक्ष्म जीवों के प्रमाण को संख्यात का भाग देनेपर एक भाग मात्र अपर्याप्त है । वहां अपनी अपनी राशि को पांच का भाग देने से संदृष्टि होती है । बहुभाग मात्र पर्याप्त है वहां अपनी अपनी राशि को चार से गुणा करके पांच का भाग देनेपर संदृष्टि होती है । कैसे वह कहते हैं -

[विशेषार्थ - ऊपर के कथन को कोष्टक के रूप में नीचे प्रस्तुत किया है -

नाम	सामान्य	बादर	सूक्ष्म	सूक्ष्मपर्याप्त	सूक्ष्मअपर्याप्त
अग्निकायिक	$\equiv ३$	$\equiv ३।९$ ९	$\equiv ३।८$ ९	$\equiv ३।८।४$ ९।५	$\equiv ३।८।९$ ९।५
पृथ्वीकायिक	$\equiv ३।९०$ ९	$\equiv ३।९०।९$ ९।९	$\equiv ३।९०।८$ ९।९	$\equiv ३।९०।८।४$ ९।९।५	$\equiv ३।९०।८।९$ ९।९।५
अप्कायिक	$\equiv ३।९०।९०$ ९।९	$\equiv ३।९०।९०$ ९।९।९	$\equiv ३।९०।९०।८$ ९।९।९	$\equiv ३।९०।९०।८।४$ ९।९।९।५	$\equiv ३।९०।९०।८।९$ ९।९।९
वायुकायिक	$\equiv ३।९०।९०।९०$ ९।९।९	$\equiv ३।९०।९०।९०।९$ ९।९।९।९	$\equiv ३।९०।९०।९०।८$ ९।९।९।९	$\equiv ३।९०।९०।९०।८।४$ ९।९।९।९।५	$\equiv ३।९०।९०।९०।८।९$ ९।९।९।९।५

अपर्याप्त काल संख्यात आवलीमात्र ऐसा २१ इससे संख्यात की संदृष्टि चार गुणा पर्याप्त काल ऐसा २१४ । चार के गुणकार के ऊपर एक अधिक की संदृष्टि करनेपर मिश्रकाल ऐसा २१ $\frac{१}{४}$ [२१ + २१४ → २१ $\frac{१}{४}$] , उसे तो सर्वत्र प्रमाणराशि करते हैं और अपने अपने सूक्ष्म जीवों के प्रमाण को फलराशि करते हैं तथा पर्याप्त कथन में पर्याप्तकाल को और अपर्याप्त कथन में अपर्याप्त काल को इच्छाराशि करते हैं। ऐसा त्रैराशिक करनेपर अपर्याप्त संख्या में अपनी अपनी सूक्ष्मराशि को पांच का भागहार होता है और पर्याप्त संख्या में चार का गुणकार और पांच का भागहार होता है।

पुनश्च पल्य के असंख्यातवें भाग $\frac{४}{३}$ से भाजित जो प्रतरांगुल $\frac{४}{३}$ उसका भाग जगत्प्रतर को देनेपर बादर पर्याप्त अप्कायिक के प्रमाण की संदृष्टि ऐसी $\frac{४}{३}$ इसको आवली के असंख्यातवें भाग की संदृष्टि यहां नौ का अंक, उसका भाग देनेपर बादर पर्याप्त पृथ्वीकायिक के प्रमाण की संदृष्टि ऐसी $\frac{४}{३}।९$ । ऐसे ही नौ का अंक भागहार के आगे लिखनेपर पर्याप्त प्रतिष्ठितप्रत्येक, अप्रतिष्ठितप्रत्येक इनकी संदृष्टि होती है।

पुनश्च घनावली के असंख्यातवें भागमात्र बादर तेजकायिक हैं उसकी संदृष्टि ऐसी $\frac{८}{३}$ । पुनश्च लोक के संख्यातवें भागमात्र बादर वायुकायिक पर्याप्त की संदृष्टि ऐसी

॥१॥ पुनश्च साधारण बादर जीवों का प्रमाण ऐसा $१३ \equiv \frac{१३}{९}$ है । इसको असंख्यात की सहनानी सात का अंक, उसका भाग देकर एक भाग में एक का गुणकार करनेपर पर्याप्तों की ऐसी $१३ \equiv \frac{१३}{९} \times ७$, बहुभाग में छह का गुणकार करनेपर अपर्याप्तों की ऐसी $१३ \equiv \frac{१३}{९} \times ७$ है।

पुनश्च आवली के असंख्यातवें भाग से $\frac{१३}{९}$ भाजित प्रतरांगुल $\frac{४}{३}$ का भाग जगत्प्रतर को देनेपर सामान्य त्रसराशि की संदृष्टि ऐसी $\frac{४}{३}$ है । पुनश्च प्रतरांगुल के संख्यातवें भाग का भाग जगत्प्रतर को देनेपर पर्याप्त त्रसराशि की संदृष्टि ऐसी $\frac{४}{३}$ यहां संख्यात की सहनानी पांच का अंक जानना ।

पुनश्च बादर पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, प्रतिष्ठित-अप्रतिष्ठित प्रत्येक तथा त्रसों की अपनी अपनी सामान्यराशि को ऊपर लिखकर घटाने के लिये उसके नीचे अपनी अपनी पर्याप्तराशि लिखकर मूलराशि से लेकर ऋणराशि तक घटाने की संदृष्टि ऐसी $\cup$ करनेपर अपर्याप्त जीवों की संदृष्टि होती है । इन सबके प्रमाण का यंत्र ऐसा -

[विशेषार्थ - बादर $\cup$ बादर पर्याप्त = बादर अपर्याप्त

बादर तेज $\cup$ बादर पर्याप्त तेजकायिक = बादर अपर्याप्त तेजकायिक

$$\equiv \frac{१३}{९} \cup \frac{४}{३}$$

बादर पृथ्वीकायिक $\cup$ बादर पर्याप्त पृथ्वीकायिक = बादर अपर्याप्त पृथ्वीकायिक

$$\equiv \frac{१३}{९} \times १० \cup \frac{४}{३} \times १९$$

बादर अप्कायिक $\cup$ बादर पर्याप्त अप्कायिक = बादर अपर्याप्त अप्कायिक

$$\equiv \frac{१३}{९} \times १० \times १० \cup \frac{४}{३} \times १९$$

बादर वायुकायिक  बादर पर्याप्त वायुकायिक = बादर अपर्याप्त वायुकायिक

$$\equiv \begin{array}{c} १० \\ १९ \end{array} \begin{array}{c} १० \\ १९ \end{array} \begin{array}{c} १० \\ १९ \end{array} \quad \begin{array}{c} \equiv \\ १ \end{array}$$

साधारण बादर जीव  साधारण बादर पर्याप्त = साधारण बादर अपर्याप्त

$$\begin{array}{c} १३ \\ ९ \end{array} \equiv \begin{array}{c} \equiv \\ ९ \end{array} \begin{array}{c} १३ \\ ९ \end{array} \begin{array}{c} १ \\ ७ \end{array} = \begin{array}{c} १३ \\ ९ \end{array} \equiv \begin{array}{c} ६ \\ ७ \end{array}$$

सामान्य प्रतिष्ठितप्रत्येक  पर्याप्त प्रतिष्ठितप्रत्येक = अपर्याप्त प्रतिष्ठितप्रत्येक

$$\equiv \begin{array}{c} ३ \\ ३ \end{array} \equiv \begin{array}{c} ३ \\ ३ \end{array} \quad \begin{array}{c} \equiv \\ ३ \end{array} \begin{array}{c} १९ \\ १९ \end{array}$$

सामान्य अप्रतिष्ठितप्रत्येक  पर्याप्त अप्रतिष्ठितप्रत्येक = अपर्याप्त अप्रतिष्ठितप्रत्येक

$$\equiv \begin{array}{c} ३ \\ ३ \end{array} \quad \begin{array}{c} \equiv \\ ३ \end{array} \begin{array}{c} १९ \\ १९ \end{array}$$

सामान्य त्रसराशि  पर्याप्त त्रसराशि = अपर्याप्त त्रसराशि

$$\begin{array}{c} \equiv \\ ३ \end{array} \quad \begin{array}{c} \equiv \\ ३ \end{array}$$

]

पुनश्च बादर तेज, अप्रतिष्ठितप्रत्येक, प्रतिष्ठितप्रत्येक, पृथ्वी, अप् इन पांच राशियों के अर्धच्छेद क्रम से एक, दो, तीन, चार, पांच बार आवली के असंख्यातवें भाग का भाग पत्य को देनेपर जो प्रमाण आये उससे हीन सागर प्रमाण जानने । और बादर वायुकायिक के अर्धच्छेद सम्पूर्ण सागर प्रमाण जानने । उनकी संदृष्टि ऐसी -

तेज	अप्रतिष्ठित	प्रतिष्ठित	पृथ्वी	अप्	वायु
सा-प ९	सा-प ९१९	सा-प ९१९१९	सा-प ९१९१९१९	सा-प ९१९१९१९१९	सा

यहां तेज आदि में सागर के आगे घटाने की ऐसी - संदृष्टि करके आगे पत्य लिखकर उसके नीचे आवली के असंख्यातवें भाग की संदृष्टि नौ का अंक उसका क्रम से एक, दो, तीन, चार, पांच बार भागहार जानना । पुनश्च वहां तेज से अप्रतिष्ठितप्रत्येक आदि में अधिक अर्धच्छेदों की संदृष्टि ऐसी -

अप्रतिष्ठित	प्रतिष्ठित	पृथ्वी	अप्	वायु
५।८ ९।९	५।८ ९।९।९	५।८ ९।९।९।९	५।८ ९।९।९।९।९	५।९ ९।९।९।९।९

यहां पल्य को भागहार का भाग देकर पुनश्च अवशेष एक एक भाग को भागहार का भाग देते देते बहुभाग बहुभाग अप्रतिष्ठितप्रत्येक आदि में दिया । वहां पल्य को आठ का गुणकार और क्रम से दो, तीन, चार, पांच बार प्रतिभाग का भागहार जानना । तथा अंत में एक भाग ग्रहण किया है इसलिये वहां पल्य को एक का गुणकार और पांच बार भागहार का भाग जानना ।

पुनश्च यहां त्रैराशिक किया । वहां प्रमाणराशि में देयराशि दो, विरलनराशि लोक का अर्धच्छेद मात्र $\frac{२}{९}$ तथा फलराशि लोक ऐसा $\frac{५}{९} \equiv$ तथा इच्छाराशि में

देयराशि दो, विरलनराशि एक बार भागहार का भाग पल्य को देकर उससे हीन सागरमात्र ऐसा $\frac{२}{९}$ । वहां प्रमाणराशि के विरलनराशि का भाग इच्छाराशि के विरलनराशि को देनेपर ऐसा $\frac{५}{९} - \frac{२}{९} = \frac{३}{९}$

अपवर्तन करनेपर लोक के अर्धच्छेदराशि से भाजित

किंचित् कम संख्यात पल्यमात्र प्रमाण ऐसा $\frac{५}{९} - \frac{१}{९} = \frac{४}{९}$ इतने लोक मांडकर परस्पर गुणित

करना । वहां मूलराशिमात्र लोक को परस्पर गुणा करनेपर असंख्यात लोक हुये, उसकी संदृष्टि ऐसी $\equiv \frac{४}{९}$ और न्यूनराशिमात्र लोकों को परस्पर गुणा करनेपर असंख्यात लोक हुये, वह अल्प है इसलिये उसकी संदृष्टि नौ का अंक उससे उसका भाग देनेपर बादर तेजकायिक जीवराशि का प्रमाण ऐसा हुआ $\equiv \frac{४}{९}$ । ऐसे ही अन्य त्रैराशिक द्वारा प्रमाण साधना ।

अब योगमार्गणा अधिकार में संदृष्टि कहते हैं -

वहां औदारिक आदि शरीरों के समयप्रबद्ध, समयप्रबद्धों की अवगाहना और वर्गणाओं की संदृष्टि का यंत्र ऐसा -

नाम	औदारिक	वैक्रियिक	आहारक	तेजस्	कार्माण
समयप्रबद्ध	स	स ऒ	स ऒ ऒ	स ऒ ऒ ख	स ऒ ऒ ख ख
समयप्रबद्ध की अवगाहना	६ २ ॐ	६ २२ ॐॐ	६ २२२ ॐॐॐ	६ २२२२ ॐॐॐॐ	६ २२२२२ ॐॐॐॐॐ
वर्गणा की अवगाहना	६ २२ ॐॐ	६ २२२ ॐॐॐ	६ २२२२ ॐॐॐॐ	६ २२२२२ ॐॐॐॐॐ	२२२२२२ ॐॐॐॐॐॐ

यहां औदारिक के समयप्रबद्ध की संदृष्टि आदि अक्षररूप ऐसी स इसको श्रेणी का असंख्यातवां भाग ऐसा ऒ उससे गुणा करनेपर वैक्रियिक की ऐसी होती है स ऒ इसको श्रेणी के असंख्यातवें भाग से गुणा करनेपर आहारक की ऐसी स ऒ ऒ उसको अनंत ऐसा ख, उससे गुणा करनेपर तेजस् की ऐसी स ऒ ऒ ख इसको अनंत से गुणा करनेपर कार्माण की ऐसी स ऒ ऒ ख ख ।

पुनश्च घनांगुल ऐसा ६ उसको सूच्यंगुल का असंख्यातवां भाग ऐसा २ उसका क्रम से एक, दो, तीन, चार, पांच बार भाग देनेपर औदारिक आदि के समयप्रबद्ध की अवगाहना का प्रमाण होता है । पुनश्च घनांगुल ६ को सूच्यंगुल के असंख्यातवें भाग २ का क्रम से दो, तीन, चार, पांच, छह बार भाग देनेपर औदारिकादि की वर्गणा के अवगाहना का प्रमाण आता है ।

पुनश्च विस्त्रसोपचय के प्रमाण में प्रमाणराशि एक परमाणु प्र।१, फलराशि अनंतगुणा जीवराशि मात्र फ।१६ख, इच्छाराशि किंचित् कम डेढ़ गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध इ।सॐ१२—, वहां लब्धराशि मात्र विस्त्रसोपचय परमाणुओं का प्रमाण ऐसा जानना— सॐ१२-१६ख । पुनश्च औदारिकादि शरीरों के द्रव्य, स्थिति, गुणहानि, नानागुणहानि, दोगुणहानि, अन्योन्याभ्यस्तराशि की संदृष्टियों का यंत्र निम्नप्रकार है ।

नाम	औदारिक	वैक्रियिक	आहारक	तेजस्	कार्माण
द्रव्य	स	स ॐ	स ॐ ॐ	स ॐ ॐ ख	स ॐ ॐ ख ख
स्थिति	प ३	सा ३३	२ ११	सा ६६	सा ७०को २
गुणहानि आयाम	२ १	२ १	२ १	प १ छे ॐ वछे । ॐ	प १ छे ॐ वछे
नानागुणहानि	प ३ २ १	सा ३३ २ १	१	छे ॐ वछे । ॐ	छे ॐ वछे
दोगुणहानि	२ १।२	२ १।२	२ १।२	प १।२ छे ॐ वछे । ॐ	प १।२ छे ॐ वछे
अन्योन्याभ्यस्तराशि	≡ ॐ	≡ ॐ ≡ ॐ	१।१	क ॐ या २ ॐ	प व

यहां पहले समयप्रबद्ध की संदृष्टि कही थी वही द्रव्य की संदृष्टि जाननी । पुनश्च स्थिति औदारिक की तीन पत्य प ३, वैक्रियिक की तैंतीस सागर सा ३३, आहारक की दो बार संख्यात गुणित आवली मात्र २ ११, तेजस् की छसठ सागर सा ६६, कार्माण की मोह अपेक्षा सागर सत्तर कोडाकोडी सा ७०को २ जाननी । पुनश्च गुणहानि आयाम औदारिकादि तीन का अंतर्मुहूर्त मात्र २ १ और तेजस् कार्माण का अपनी अपनी स्थिति संख्यात पत्य प्रमाण प १ को अपनी अपनी नानागुणहानि का भाग देनेपर होता है । पुनश्च नानागुणहानि औदारिक वैक्रियिक की अपनी अपनी स्थिति को गुणहानि आयाम २ १ का भाग देनेपर होती है, आहारक की संख्यात मात्र १ है, तेजस् की पत्य के अर्धच्छेद छे में से पत्य की वर्गशलाका के अर्धच्छेद वछे घटाने की आगे लिखी ऐसी ॐ संदृष्टि करके उसको असंख्यात से गुणा करने के लिये आगे ऐसी ॐ संदृष्टि करनेपर ऐसा छे ॐ वछे । ॐ होता है । कार्माण की असंख्यात ॐ के गुणकार के बिना तेजस्वत् संदृष्टि होती है छे ॐ वछे ।

पुनश्च दोगुणहानि में जो गुणहानि की संदृष्टि थी उसको दो से गुणा करने के लिये आगे दो के अंक की संदृष्टि होती है । पुनश्च अन्योन्याभ्यस्तराशि की क्रम से औदारिक की असंख्यात लोकप्रमाण ऐसी ≡ ॐ, इससे असंख्यात लोकगुणा वैक्रियिक

की ऐसी $\equiv ३ \equiv ३$, आहारक की संख्यात गुणित संख्यात मात्र ऐसी १।१, तेजस् की सूच्यंगुल के असंख्यातवें भागप्रमाण ऐसी २, इसका अपवर्तन करनेपर असंख्यात कल्पकाल मात्र होती है, उसकी वहीं पर संदृष्टि ऐसी क ३, कार्माण की पत्य को वर्गशलाका का भाग देनेपर ऐसी प संदृष्टि जाननी । यहां गुणहानि, नानागुणहानि, अन्योन्याभ्यस्तराशि में त्रैराशिक आदि विशेष है । वहां संदृष्टि सुगम है । क्योंकि अपने अपने गुणहानि आयाम को प्रमाणराशि करके, फलराशि एक करके, अपनी अपनी स्थिति को इच्छाराशि करनेपर औदारिकादि शरीरों की नानागुणहानि राशि होती है ।

पुनश्च अपनी अपनी नानागुणहानि राशि को प्रमाणराशि करके, फलराशि अपनी अपनी स्थिति करके, इच्छाराशि एक करनेपर औदारिकादि शरीरों का गुणहानि आयाम होता है।

नाम	प्रमाण गुणहानि	फल एक	इच्छा स्थिति	लब्ध-नानागुणहानि
औदारिक	२ १	१	प ३	प ३ २ १
वैक्रियिक	२ १	१	सा ३३	सा ३३ २ १
आहारक	२ १	१	२ १ १	१
तेजस्	सा ६६ छे वछे।३	१	सा ६६	छे वछे।३
कार्माण	सा ७०को २ छे वछे	१	सा ७०को २	छे वछे

नाम	प्रमाण गुणहानि	फल स्थिति	इच्छा एक	लब्ध-नानागुणहानि
औदारिक	प ३ २ १	प ३	१	२ १
वैक्रियिक	सा ३३ २ १	सा ३३	१	२ १
आहारक	१	२ १ १	१	२ १
तेजस्	छे वछे।३	सा ६६	१	सा ६६ छे वछे।३
कार्माण	छे वछे	सा ७०को २	१	सा ७०को २ छे वछे

पुनश्च अन्योन्याभ्यस्तराशि का प्रमाण लाने के लिये प्रमाणराशि में देय दो, विरलन लोक का अर्धच्छेद मात्र, फलराशि लोक, इच्छाराशि में देय दो विरलन अंतर्मुहूर्त से भाजित तीन पत्य; $\frac{प्र\ दे २}{वि छे छे छे ९} \equiv \frac{इ\ दे २}{वि प ३}$ वहां प्रमाण के विरलनराशि का $\frac{२१}{२१}$

भाग इच्छाराशि के विरलन को देनेपर ऐसा होता है $\frac{प ३}{२१ छे छे छे ९}$ । इतने लोक मांडकर

परस्पर गुणा करनेपर असंख्यात लोक $\equiv ७$ हुये । वह औदारिक की अन्योन्याभ्यस्तराशि है।

इसीप्रकार वैक्रियिक की नानागुणहानि को लोक के अर्धच्छेद का भाग देनेपर ऐसा $\frac{सा ३३}{२१ छे छे छे ९}$ इतने लोक मांडकर परस्पर गुणा करनेपर उसकी अन्योन्याभ्यस्तराशि $\frac{७}{७}$

ऐसी $\equiv ७ \equiv ७$ होती है । अथवा प्रमाणराशि में विरलनराशि औदारिक की नानागुणहानि ऐसी $\frac{प्र प ३}{२१}$, फलराशि असंख्यात लोक $\equiv ७$, इच्छाराशि में विरलनराशि औदारिक $\frac{२१}{२१}$

की नानागुणहानि से एक सौ दस कोडाकोडी गुणा ऐसा $\frac{इ प ३।९९०}{२१}$ को २ । यहां

लब्ध एक सौ दस कोडाकोडी बार औदारिक की अन्योन्याभ्यस्तराशि को परस्पर गुणा करनेपर जो प्रमाण हो वह वैक्रियिक की अन्योन्याभ्यस्तराशि जानना । इसलिये औदारिक की अन्योन्याभ्यस्तराशि से वैक्रियिक की अन्योन्याभ्यस्तराशि में गुणकार होता है ।

आहारक के संख्यात मात्र दो को परस्पर गुणा करनेपर अन्योन्याभ्यस्तराशि ऐसी $\frac{११}{११}$ होती है । तेजस् में नानागुणहानि ऐसी $\frac{छे वछे ७}{७}$ इसको पत्य के अर्धच्छेद राशि का भाग देनेपर ऐसा $\frac{छे वछे ७}{७}$ इसमें ऋण ऐसा $\frac{वछे ७}{७}$ जुदा करनेपर अवशेष

ऐसा $\frac{छे ७}{७}$, अपवर्तन करनेपर असंख्यात रहे, सो ऐसे $\frac{७}{७}$ इतने पत्य परस्पर गुणा करनेपर

सूच्यंगुल का असंख्यातवां भाग ऐसा होता है $\frac{२}{२}$ । पुनश्च ऋणराशि मात्र द्विक (दो संख्या) परस्पर गुणा करनेपर पत्य का असंख्यातवां भाग हुआ उसका भाग देनेपर ऐसा $\frac{२}{७प ७}$ अपवर्तन करनेपर सूच्यंगुल के असंख्यातवें भाग मात्र ही तेजस् की अन्योन्याभ्यस्तराशि

ऐसी हुयी ३ ।

कार्माणशरीर में नानागुणहानि ऐसी छे वछे । वहां मूलराशि पत्य के अर्धच्छेद मात्र ऐसा छे इतने द्विक परस्पर गुणा करनेपर पत्य होता है । ऋणराशि वर्गशलाका के अर्धच्छेद मात्र वछे द्विक को परस्पर गुणा करनेपर पत्य की वर्गशलाका होती है । पत्य को उसकी वर्गशलाका का भाग देनेपर कर्माण की अन्योन्याभ्यस्तराशि ऐसी प व होती है । ऐसे इनका साधन जानना । पुनश्च यहां रचना कहते हैं ।

कर्माण समयप्रबद्ध द्रव्य ऐसा स $\frac{१०}{२}$ ख ख, लघु संदृष्टि करने के लिये उसकी संदृष्टि ऐसी स, अन्योन्याभ्यस्तराशि की संदृष्टि आदि अक्षररूप ऐसी अ उसमें से एक घटाकर उसका भाग देनेपर अंतिम गुणहानि का द्रव्य ऐसा $\frac{१०}{३}$ ।

पुनश्च दोगुणा, दोगुणा, दोगुणा क्रम से होकर आधी अन्योन्याभ्यस्तराशि ऐसी अ $\frac{१०}{२}$ उससे अंतिम गुणहानि के द्रव्य को गुणा करनेपर प्रथम गुणहानि का द्रव्य ऐसा है $\frac{१०}{३}$ । उसको गुणहानि की संदृष्टि आदि अक्षररूप ऐसी गु उसका भाग देनेपर मध्यधन ऐसा $\frac{१०}{३}$ २ गु होता है । पुनश्च एक कम गुणहानि के आधे से हीन दो गुणहानि ऐसा $\frac{१०}{३}$ यहां दो गुणहानि में से आधी गुणहानि घटानेपर डेढ़ गुणहानि ऐसे हुयी गु $\frac{१०}{३}$ और ऋण का ऋण आधे गुणहानि में कम एक का आधा था उसको राशि का धन करने के लिये नीचे दो का भागहार देखकर ऊपर एक अधिक की संदृष्टि की है ।

[विशेषार्थ - एक कम गुणहानि के आधे से हीन दोगुणहानि =

$$२गु - \frac{गु-१}{२} \longrightarrow २गु - \left(\frac{गु}{२} - \frac{१}{२} \right) \longrightarrow २गु - \frac{गु}{२} + \frac{१}{२}$$

$$\longrightarrow \frac{\text{गु३} + \frac{१}{२}}{\frac{१}{२}} \longrightarrow \frac{\frac{१}{२}}{\text{गु३}} \quad]$$

सो इसका उस मध्यधन को भाग देनेपर प्रथम गुणहानि संबंधी चय ऐसा $\frac{\text{स अ}}{\text{अ}} \frac{१}{२} \frac{\text{गु}}{\text{गु३}}$

इसको दो गुणहानि ऐसा २गु उससे गुणा करनेपर प्रथम गुणहानि का प्रथम निषेक ऐसा

$$\frac{\text{स अ}}{\text{अ}} \frac{\text{गु}}{\text{गु३}} \quad \text{इसमें से एक एक चय घटानेपर एक अधिक गुणहानि ऐसा } \frac{१}{\text{गु}} \text{ उससे } \frac{\frac{१}{२}}{\text{अ}} २\text{गु} \frac{\text{गु३}}{२}$$

गुणित अपने चय मात्र अंतिम निषेक ऐसा $\frac{\text{स अ}}{\text{अ}} \frac{१}{\text{गु}}$ होता है । ऐसे द्वितीयादि गुणहानि $\frac{\frac{१}{२}}{\text{अ}} २\text{गु} \frac{\text{गु३}}{२}$

में रचना करके अंतिम गुणहानि में द्रव्य ऐसा $\frac{\text{स}}{\text{अ}}$ । इसको गुणहानि का भाग देनेपर

मध्यधन ऐसा $\frac{\text{स}}{\text{अ}} \frac{१}{\text{गु}}$, इसको एक कम गुणहानि के आधे से हीन दो गुणहानि का

भाग देनेपर चय ऐसा $\frac{\text{स}}{\text{अ}} \frac{१}{\text{गु३}}$ इसको दो गुणहानि गु२ से गुणा करनेपर प्रथम निषेक

ऐसा $\frac{\text{स}}{\text{अ}} \frac{\text{गु}}{\text{गु३}}$ इसमें से एक एक चय घटानेपर एक अधिक गुणहानि $\frac{१}{\text{गु}}$ से गुणित $\frac{\frac{१}{२}}{\text{अ}} \frac{\text{गु}}{\text{गु३}}$

निज चय प्रमाण अंतिम निषेक ऐसा $\frac{\text{स}}{\text{अ}} \frac{१}{\text{गु}}$ होता है । $\frac{\frac{१}{२}}{\text{अ}} \frac{\text{गु}}{\text{गु३}}$

[विशेषार्थ - समयप्रबद्ध - स (सर्वद्रव्य), अन्योन्याभ्यस्तराशि - अ,

अंतिम गुणहानि का द्रव्य $\frac{\text{स}}{\text{अ}}$, उपांत गुणहानि का द्रव्य $\frac{\text{स २}}{\text{अ}}$,

पहले गुणहानिका द्रव्य $\frac{स अ}{अ २}$, पहले गुणहानि का मध्यधन $\frac{स अ}{अ २ गु}$ ।

$$\begin{aligned} \text{दो गुणहानि} - \frac{१ \text{ कमगच्छ}}{२} &\longrightarrow २गु - \left(\frac{गु-१}{२}\right) \longrightarrow २गु - \frac{गु+१}{२+२} \\ &\longrightarrow \frac{गु३+१}{२+२} \longrightarrow \frac{१}{गु३} \end{aligned}$$

$$\text{पहली गुणहानि का चय} = \text{मध्यधन} \div \frac{१}{गु३} = \frac{स अ}{अ २ गु} \frac{१}{गु३}$$

$$\text{पहली गुणहानि का पहला निषेक} = \text{चय} \times \text{दो गुणहानि} \longrightarrow \frac{स अ गु२}{अ २ गु} \frac{१}{गु३}$$

$$\text{पहली गुणहानि का अंतिम निषेक} = \text{चय} \times \frac{१}{गु} \longrightarrow \frac{स अ गु}{अ २ गु} \frac{१}{गु३} \quad]$$

इस रचना का यंत्र ऐसा जानना -

नाम	प्रथमगुणहानि	द्वितीयगुणहानि	मध्यगुणहानि	उपांतगुणहानि	अंतिमगुणहानि
अंतिमनिषेक	$\frac{स अ गु}{अ २ गु} \frac{१}{गु३}$	$\frac{स अ गु}{अ २ २ गु} \frac{१}{गु३}$	०००००	$\frac{स २ गु}{अ गु} \frac{१}{गु३}$	$\frac{स गु}{अ गु} \frac{१}{गु३}$
मध्यनिषेक	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०	० ० ०
आदिनिषेक	$\frac{स अ गु२}{अ २ गु} \frac{१}{गु३}$	$\frac{स अ गु २}{अ २ २ गु} \frac{१}{गु३}$	०००००	$\frac{स २ गु२}{अ गु} \frac{१}{गु३}$	$\frac{स गु २}{अ गु} \frac{१}{गु३}$
सर्वद्रव्यप्रमाण	$\frac{स अ}{अ २}$	$\frac{स अ}{अ २ २}$	०००००	$\frac{स २}{अ}$	$\frac{स}{अ}$

यहां प्रथम गुणहानि के द्रव्य, निषेक आदि को दो का भाग देनेपर द्वितीय गुणहानि के द्रव्यादिक जानने और अंतिम गुणहानि के द्रव्य आदि को दो से गुणा करनेपर उपांत गुणहानि के द्रव्यादिक जानने । मध्य गुणहानि के द्रव्यादिक में बिंदी की संदृष्टि जाननी। पुनश्च अंकसंदृष्टि द्वारा द्रव्य, निषेक आदि की रचना तथा कर्म का सत्त्व दिखाने के लिये अंकसंदृष्टि अपेक्षा त्रिकोण यंत्र रचना टीका में लिखी है वह जानना । (देखिये - सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका जीवकाण्ड) - त्रिकोण यंत्र में नीचे से लेकर अड़तालीस पंक्तियां हैं । उनमें एक एक पंक्तिरूप एक एक समय संबंधी एक एक निषेक जानना। आठ पंक्तियों के समूह को गुणहानि संज्ञा जाननी । सो यहां त्रिकोण यंत्र का जोड़ कहते हैं । वहां प्रथम ही हीन संकलन अपेक्षा से कहते हैं -

नीचे से लेकर आठ पंक्तिरूप जो प्रथम गुणहानि उसमें जो द्वितीयादि पंक्ति में निषेक घटे, उनके प्रमाणरूप घटाने योग्य जो ऋण, उसको मिलानेपर गुणहानि मात्र पंक्तियों का धन गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध प्रमाण होता है । क्योंकि प्रथम पंक्ति का जोड़ समयप्रबद्ध प्रमाण है और ऋण को मिलानेपर अन्य पंक्तियों का भी जोड़ इसके समान होता है । सो गुणहानि का प्रमाण आठ, उससे गुणित समयप्रबद्ध का प्रमाण तिरसठ सौ ऐसा ६३००।८ होता है । अब इसमें से ऋण कितना घटाना वह कहते हैं - प्रथम निषेक तो एक कम गुणहानि मात्र ५१२।७, द्वितीय निषेक दो कम गुणहानि मात्र ५१२।६, ऐसे ही एक एक घटते हुये तृतीयादि निषेक होकर अंत में द्विचरम निषेक एक प्रमाण जानना । इसतरह एक निषेक गुणहानि मात्र पंक्तियों में घटता है । अंतिम निषेक का सर्वत्र सद्भाव है । सो यहां द्वितीयादि निषेक प्रथम निषेक में प्रथम निषेक से जितने जितने अपने अपने चय घटे, उनको मिलानेपर सर्व निषेक प्रथम निषेक समान ऐसे हुये

५१२।७
५१२।६
५१२।५
५१२।४
५१२।३
५१२।२
५१२।१

उनका जोड़ एक कम गच्छ का एक

बार संकलन मात्र प्रथम निषेक प्रमाण हुआ । सो यहां गच्छ का प्रमाण आठ, सो 'व्येकपदोत्तरघातः' इत्यादि टीका में ज्ञानमार्गणा अधिकार में बताये हुये संकलन सूत्र

की अपेक्षा से एक कम गच्छ को दो का और सम्पूर्ण गच्छ को एक का भाग देकर उससे प्रथम निषेक यहां पांच सौ बारह उसको गुणा करनेपर इतना जोड़ हुआ $५१२\frac{१०}{२९}$ ।

[विशेषार्थ - सात का एक बार संकलनधन $\frac{७ \times ८}{२ \times ९} = \frac{१०}{२९}$]

पुनश्च यहां मिलाये हुये चय ज्यों के त्यों घटाने से ऐसे $\begin{array}{r} ३२१२९ \\ ३२१५५ \\ ३२१९० \\ ३२१६ \\ ३२१३ \\ ३२१९ \end{array}$ । यहां प्रथम

पंक्ति में कोई निषेक घटा नहीं, दूसरी पंक्ति में एक प्रथम निषेक घटा । वहां कोई चय मिलाया नहीं । तीसरी पंक्ति में एक पहला, एक दूसरा निषेक घटा उसमें दूसरे निषेक में एक चय मिलाया उसे लिखा है । तीसरी पंक्ति में एक पहला, एक दूसरा, एक तीसरा निषेक घटा वहां दूसरे निषेक में एक चय, तिसरे निषेक में दो चय, मिलानेपर वे तीन चय लिखे हैं । ऐसे ही ऊपर जानना । सो इसका जोड़ दो कम गच्छ का दो बार संकलन मात्र चय प्रमाण हुआ । सो संकलन सूत्र के अनुसार दो कम गच्छ ६, एक कम गच्छ ७ सम्पूर्ण गच्छ ८ को तीन, दो, एक का भाग देकर

उससे चय का प्रमाण बत्तीस उसको गुणा करनेपर ऐसा $३२\frac{२०}{३२९}\frac{१०}{१८}$ हुआ । पुनश्च

पूर्वोक्त ऋण द्रव्य ऐसा $५१२\frac{१०}{२९}\frac{१०}{१८}$ वहां प्रथम निषेक को दो गुणहानि ऐसा ८।२

उससे संभेदन करनेपर पांच सौ बारह की जगह बत्तीस के आगे दो गुणा गुणहानि का गुणकार ऐसा होता है $३२।८।२।\frac{१०}{२९}\frac{१०}{१८}$ यहां गुणकार और भागहारों को संदृष्टि

के लिये तीन से गुणा करनेपर ऐसा $३२।८।६।\frac{१०}{३२९}\frac{१०}{१८}$ । यहां छह गुणहानि ऐसी ८।६

उसमें एक गुणहानि गुणित का प्रमाण ऐसा होता है $३२।८।\overset{१}{\underset{३}{२}}।\overset{१}{\underset{२}{९}}।८$ इसमें घटाने योग्य

चर्यों के जोड़रूप ऋण का ऋण ऐसा $३२।\overset{२}{\underset{३}{८}}।\overset{१}{\underset{२}{९}}।८$ उसको घटाते हैं । सो अन्य

सब समान देखकर बत्तीस के आगे गुणहानि आठ का गुणकार था उसमें इसका दो

कम गुणहानि का गुणकार घटानेपर अवशेष दो का गुणकार रहा, तब ऐसा हुआ $३२।२।\overset{१}{\underset{३}{२}}।\overset{१}{\underset{२}{९}}।८$

इसको छह गुणहानि में से एक गुणहानि घटानेपर वहां पांच गुणहानियों का प्रमाण ऐसा

रहा था $३२।८।\overset{१}{\underset{३}{२}}।\overset{१}{\underset{२}{९}}।८$ उसमें जोड़ना । सो अन्य सर्व समान देखकर पांच गुणहानियों

के ऊपर दो की अधिकता करनेपर और भागहारों को परस्पर गुणा करनेपर प्रथम गुणहानि

में ऋण ऐसा $३२।\overset{२}{\underset{६}{८}}।\overset{१}{\underset{२}{९}}।८$ होता है । ऐसे प्रथम गुणहानि के धन और ऋण जानना ।

पुनश्च यहां प्रथम गुणहानि का धन ऐसा $६३००।८$ उसमें अंतिम गुणहानि का धन

ऐसा $१००।८$ घटानेपर अवशेष ऐसा $६२००।८$ उसका आधा ऐसा $३१००।८$ द्वितीय

गुणहानि का धन जानना ।

ऐसे ही सर्व ऊपर भी सर्व गुणहानियों के धन जानने । वे ऐसे हैं -

$१००।८$
 $३००।८$
 $७००।८$
 $१५००।८$
 $३१००।८$
 $६३००।८$

यहां एक एक गुणहानि के धन में चरम गुणहानि का धनमात्र ऋण ऐसा $१००।८$ मिलाकर

दो से संभेदन करनेपर ऐसा धन होता है $१००।८।२$ । यहां 'अंतधनं गुणगुणियं'

$२००।८।२$
 $४००।८।२$
 $८००।८।२$
 $१६००।८।२$
 $३२००।८।२$

इत्यादि सूत्र द्वारा अंतधन ऐसा $३२००।८।२$ उसका गुणकार दो से गुणा करनेपर

ऐसा ६४००।८।२ उसमें से आदि ऐसा १००।८।२ घटानेपर सर्व गुणहानि के धन का जोड़ ऐसा हुआ ६३००।८।२ ।

पुनश्च द्वितीयादि गुणहानि का ऋण भी क्रम से आधा आधा है ।

$\frac{२}{६}\frac{१०}{१००।८।२}$ अंतिम गुणहानि का ऋण

$\frac{२}{६}\frac{१०}{२००।८।२}$ पंचम गुणहानि का ऋण

$\frac{२}{६}\frac{१०}{४००।८।२}$ चतुर्थ गुणहानि का ऋण

$\frac{२}{६}\frac{१०}{८००।८।२}$ तृतीय गुणहानि का ऋण

$\frac{२}{६}\frac{१०}{१६००।८।२}$ द्वितीय गुणहानि का ऋण

$\frac{२}{६}\frac{१०}{३२००।८।२}$ प्रथम गुणहानि का ऋण

यहां गुण्य आधा आधा किया है [३२ - १६ - ८ - ४ - २ - १] ।

सो 'अंतधनं गुणगुणियं' इत्यादि सूत्र द्वारा यहां अंतधन ऐसा $\frac{२}{६}\frac{१०}{३२००।८।२}$ गुणकार

दो से गुणा करनेपर ऐसा $\frac{२}{६}\frac{१०}{६४००।८।२}$ इसमें से आदि ऐसा $\frac{२}{६}\frac{१०}{१००।८।२}$ घटाने के

लिये चौंसठ गुण्य में से एक गुण्य घटानेपर समस्त गुणहानि का ऋण ऐसा $\frac{२}{६}\frac{१०}{६३००।८।२}$

होता है। पुनश्च पश्चात् छहों गुणहानियों में मिलाया हुआ दूसरा ऋण ऐसा

१००।८
१००।८
१००।८
१००।८
१००।८
१००।८

इसका जोड़ नानागुणहानि गुणित अंतगुणहानि का धन मात्र ऐसा १००।८।६ है ।

इसप्रकार ये तीनों राशि ऐसी -	धन	प्रथम ऋण	द्वितीय ऋण
	६३००।८।२	६३। $\frac{२}{१०}$ । $\frac{१०}{८}$	१००।८।६

यहां उत्कृष्ट समयप्रबद्ध प्रमाण शलाका से इनको तिरसठ सौ का भाग देनेपर ऐसा-

धन	प्रथम ऋण	द्वितीय ऋण	
६३००।८।२	६३। $\frac{२}{१०}$ । $\frac{१०}{८}$	१००।८।६	
६३००	६३००।६	६३००	
अपवर्तन करनेपर -			
८।२	$\frac{२}{८१५}$ । $\frac{१०}{८}$	८।६	
	१००।६	६३	
स३।८।२	स३। $\frac{२}{१०}$ । $\frac{१०}{८}$	स३।८।६	ऐसे हुआ ।
	१००।६	६३	

यहां प्रथम ऋण में सौ का भागहार था उसको एक अधिक तीनगुणा गुणहानि के द्वारा संभेदन करनेपर सौ की जगह एक अधिक तीनगुणा गुणहानि ऐसी $\frac{१}{८।३}$ उसका प्रमाण पच्चीस, उसके आगे चार का गुणकार हुआ । इस चार से आगे के

छह को गुणा करनेपर तीन गुणहानि मात्र प्रमाण हुआ । ऐसा करनेपर ऐसा $\frac{२}{१०}$ । $\frac{१०}{८}$ । $\frac{१}{८।३}$ ।८।३

हुआ। यहां गुणहानि ऐसी ८ उसका अपवर्तन करनेपर प्रथम ऋण ऐसा हुआ $\frac{२}{१०}$ । $\frac{१०}{८}$ । $\frac{१}{८।३}$ ।३

पुनश्च यहां आठ के गुणकार के ऊपर एक कम उससे गुणित ऋण के ऋण के प्रमाण को और अवशेष को जुदा जुदा स्थापनेपर दोनों राशि ऐसी -

ऋण राशि	ऋण की ऋण राशि
$\begin{array}{r} 2 \\ \text{स०} \overline{८१५।८} \\ 9 \\ \hline ८।३।३ \end{array}$	$\begin{array}{r} 2 \\ \text{स०} \overline{८१५} \\ 9 \\ \hline ८।३।३ \end{array}$

इन दोनों राशियों में पांच गुणहानि मात्र गुणकार के ऊपर जो अधिक था $\overline{८१५}$ उससे गुणित प्रमाण को नीचे जुदा स्थापित करके अवशेष को ऊपर स्थापित करनेपर ऐसा होता है -

ऋण राशि	ऋण का ऋण
$\begin{array}{r} \text{स०} \overline{८१५।८} \\ 9 \\ \hline ८।३।३ \end{array}$	$\begin{array}{r} \text{स०} \overline{८१५} \\ 9 \\ \hline ८।३।३ \end{array}$
ऋण का धन	ऋण के ऋण का धन
$\begin{array}{r} \text{स०} \overline{८१२।८} \\ 9 \\ \hline ८।३।३ \end{array}$	$\begin{array}{r} \text{स०} \overline{८१२} \\ 9 \\ \hline ८।३।३ \end{array}$

यहां प्रथम ऋण के धन में ऊपर गुणकारों को और नीचे भागहारों को तीन से गुणा करनेपर ऐसा होता है $\begin{array}{r} \text{स०} \overline{८१६।८} \\ 9 \\ \hline ८।३।३।३ \end{array}$ यहां छह में पांचरूप ऐसे $\begin{array}{r} \text{स०} \overline{८१५।८} \\ 9 \\ \hline ८।३।३।३ \end{array}$,

उनको अपने ऊपर के ऋणराशि में जोड़ते हैं, सो ऊपर के ऋण को तीन से ऊपर नीचे गुणित करनेपर ऐसा $\begin{array}{r} \text{स०} \overline{८१८।३।५।८} \\ 9 \\ \hline ८।३।३।३ \end{array}$ होता है। सो इसके और उसके अन्य समानता

देखकर तीनगुणा गुणहानि ऐसी $८।३$ उसके ऊपर एक अधिक की संदृष्टि करनेपर

ऐसा $\begin{array}{r} 9 \\ \text{स०} \overline{८१८।३।५।८} \\ 9 \\ \hline ८।३।३।३ \end{array}$ हुआ। यहां एक अधिक तीन गुणहानि ऐसा $\begin{array}{r} 9 \\ \overline{८।३} \end{array}$ उसका

अपवर्तन करनेपर और भागहार में दो जो तीन के अंक उनको परस्पर गुणा करनेपर ऐसा होता है $\begin{array}{r} \text{स०} \overline{८१५।८} \\ 9 \end{array}$ पुनश्च ऋण के धन के छह रूपों में पांच तो ऋणराशि में

जोड़े और एक अवशेष रहा, सो ऐसा $\frac{स७।८।१}{८।३।३।३}$ सो इसको ऋण के ऋण में से

घटाते हैं । सो ऋण के ऋण को ऊपर नीचे तीन से गुणा करनेपर ऐसा हुआ $\frac{स७।८।१५}{८।३।३।३}$

इसमें अन्य समान देखकर गुणकार पंद्रह में से एक घटानेपर ऐसा हुआ $\frac{स७।८।१५}{८।३।३।३}$ ।

पुनश्च इसको ऊपर नीचे तीन से गुणित करनेपर ऐसा $\frac{स७।८।३।१४}{८।३।३।३।३}$ इसमें ऋण के

ऋण के धन को ऊपर नीचे नौ से गुणित करनेपर ऐसा $\frac{स७।१८}{८।३।३।१९}$ इसके अठारह

रूपों में चौदह रूप ऐसे $\frac{स७।१४}{८।३।३।१९}$ ऋण के ऋण में जोड़ने । सो अन्य समान

देखकर तीनगुणा गुणहानि के ऊपर एक अधिक करना तब ऋण का ऋण ऐसा हुआ $\frac{स७।८।३।१४}{८।३।३।३।३}$ यहां एक अधिक तीनगुणा गुणहानि को समान देखकर अपवर्तन करनेपर

ऐसा $\frac{स७।१४}{३।३।३}$ पुनश्च यहां ऊपर तो चौदह और नीचे तीन बार तीन को परस्पर गुणा करनेपर सत्ताइस होते हैं और चौदह द्वारा अपवर्तन अट्ठाइस होनेपर होते हैं । सो यहां एक कम को गिनती में न लेते हुये चौदह से अपवर्तन करनेपर आधा समयप्रबद्ध प्रमाण हुआ $स७।$ पुनश्च अठारह रूपों में चौदह रूप तो जोड़े, अवशेष चार रूप रहे वे ऐसे

$\frac{स७।४}{८।३।३।१९}$ सो इसका प्रमाण समयप्रबद्ध के असंख्यातवें भागमात्र है । उसको मिलाने

के लिये किंचित् अधिक की ऊपर ऐसी । संदृष्टि करनेपर ऋण की ऋणराशि ऐसी होती है $स७।$ इसको द्वितीय ऋण एक कम अन्योन्याभ्यस्त से भाजित और नानागुणहानियों

से गुणित समयप्रबद्धमात्र अंकसंदृष्टि द्वारा ऐसा स० ८।६ और अर्थसंदृष्टि द्वारा ऐसा ६३

स० ८।५ वछे उसमें घटाकर अपवर्तन करनेपर अवशेष किंचित् कम संख्यात पत्य
 वछे $\frac{90}{8}$

की वर्गशलाका गुणित समयप्रबद्ध प्रमाण द्वितीय ऋण रहता है । पुनश्च प्रथम ऋण
 ऐसा स० ८।५ रहा था उसको संदृष्टि के लिये ऊपर नीचे दो से गुणा करनेपर ऐसा
 स० ८।१० यहां दस रूपों में एक रूप ऐसा स० ८।१ उसको जुदा रखनेपर अवशेष
 ऐसा स० ८।९ उसका नौ से अपवर्तन करनेपर आधा गुणहानि ऐसा ८ उससे गुणित
 समयप्रबद्ध प्रमाण ऋण ऐसा होता है स० ८ इसको दो गुणहानि से गुणित समयप्रबद्ध
 प्रमाण जो धनराशि ऐसा स० ८।२ था उसमें से घटानेपर डेढ़ गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध
 प्रमाण ऐसा स० ८।३ हुआ । पुनश्च जुदा रखा था गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध का
 अठारहवां भाग ऐसा स० ८।१ उसमें द्वितीय ऋण किंचित् कम संख्यात वर्गशलाका
 गुणित समयप्रबद्ध प्रमाण ऐसा स० ८ मिलाने के लिये किंचित् अधिक की ऊपर संदृष्टि
 करनेपर ऐसा हुआ स० ८। उसको घटाने के लिये समयप्रबद्ध का डेढ़ गुणहानि मात्र
 गुणकार ऐसा १२ उसके आगे किंचित् कम की ऐसी - संदृष्टि करनेपर त्रिकोणयंत्र
 का जोड़मात्र सत्त्व द्रव्य का प्रमाण ऐसा स० १२- होता है ।

अब अधिक अधिक संकलन अपेक्षा त्रिकोणयंत्र का जोड़ कहते हैं -

वहां त्रिकोण यंत्र में ऊपर से लेकर आठ पंक्ति पर्यंत अंतिम गुणहानि है।
 वहां ऊपर की पंक्ति में एक अंत ही का निषेक ऐसा ९ है । उसके नीचे की
 पंक्ति में अंत के दो निषेक ऐसे ९।१०, उसके नीचे की पंक्ति में अंत के तीन
 निषेक ऐसे हैं ९।१०।११ । ऐसे एक एक निषेक बढ़ते हुये वहां ऊपर से आठवीं
 पंक्तिरूप अंतिम गुणहानि के नानासमय संबंधी प्रथम निषेक, उसमें गुणहानिमात्र निषेक
 ऐसे ९।१०।११।१२।१३।१४।१५।१६ पाये जाते हैं । यहां अंत निषेक समान सर्व
 निषेकों को जुदा स्थापते हैं और निषेकों में होनेवाले अंतिम गुणहानि के चय जुदे

स्थापते हैं तब ऐसे

९।९	०
९।२	९।९
९।३	९।३
९।४	९।६
९।५	९।९०
९।६	९।९५
९।७	९।२९
९।८	९।२८

हुये ।

यहां ऊपर की पंक्ति में एक नौ का ही निषेक है उसे लिखा, उसमें चय का अभाव है । पुनश्च उसके नीचे दो निषेक हैं, इसलिये दो अंतिम निषेक लिखे और आगे द्विचरम (उपांत) निषेक में एक चय अधिक है वह लिखा । पुनश्च उसके नीचे तीन निषेक हैं इसलिये तीन अंतिम निषेक लिखे और आगे द्विचरम निषेक में एक और त्रिचरम निषेक में दो ऐसे तीन चय अधिक हैं इसलिये तीन चय लिखे ऐसे ही सर्व जानने । यहां चय का प्रमाण एक जानना । अंत निषेक का प्रमाण नौ जानना उसके आगे गुणकार जानने । इन दोनों पंक्तियों का जोड़ देना । सो प्रथम पंक्ति का जोड़ तो गच्छ का एक बार संकलन मात्र चरम निषेक प्रमाण हुआ। सो यहां गच्छ गुणहानिमात्र आठ, इसलिये संकलनसूत्र द्वारा गच्छ और एक अधिक गच्छ को

दो और एक का भाग देकर $\left[\frac{८।८}{२।९} \right]$ उससे अंत निषेक एक अधिक गुणहानि आठमात्र

ऐसा $\frac{९}{८}$ उसको गुणा करनेपर प्रथम पंक्ति का जोड़ ऐसा होता है $\frac{९}{८।८।८}।$

पुनश्च दूसरी पंक्ति का जोड़ एक कम गच्छ का दो बार संकलनमात्र चयप्रमाण है । सो संकलन सूत्र द्वारा एक कम गच्छ, सम्पूर्ण गच्छ और एक अधिक गच्छ को क्रम से तीन, दो, एक का भाग देकर उससे चय ऐसा ९ उसको गुणा करनेपर द्वितीय पंक्ति का जोड़ ऐसा $\frac{९}{३।२।९}।$ अब इन दोनों पंक्तियों के जोड़ को मिलाना।

सो तीन से समच्छेद किया हुआ प्रथम पंक्ति का जोड़ ऐसा $\frac{९}{३।२।९}।३$ होता है ।

इसके और दूसरी पंक्ति के जोड़ में अन्य समान देखकर ऐसे $\frac{९}{८}।३$ गुणकार में

ऐसा $\frac{9}{8}$ मिलाया तब दो से अधिक चार गुणहानिमात्र गुणकार हुआ । क्योंकि एक अधिक आठ का तीनगुणा सत्ताइस उसमें एक कम आठ मिलानेपर चौंतीस हुये वही दो अधिक चौगुणा आठ का प्रमाण है । ऐसे दो से अधिक चार गुणहानि ऐसा $\frac{3}{18}$ उससे गुणित गुणहानिप्रमाण गच्छ का संकलन $\frac{9}{2} \mid \frac{9}{9}$ और उसको तीन का भाग देनेपर

ऐसा $\frac{9}{6} \mid \frac{3}{18} \mid 9$ अंत गुणहानि संबंधी आदिधन हुआ, उत्तरधन यहां है नहीं । पुनश्च

इसके नीचे आठ पंक्तिरूप द्विचरम गुणहानि उसमें जो अंतिम गुणहानि की ऊपर से आठवीं पंक्तिरूप प्रथम निषेक में जो नौ से लेकर सोलह के निषेक तक निषेक कहे वे तो जुदे जुदे सर्व पंक्तियों में पाये जाते हैं और अंतिम गुणहानि की अंतिम पंक्ति से लेकर पंक्तियों में जो निषेक कहे उनसे दोगुणा प्रमाणवाले निषेक इसकी (द्वितीय गुणहानि की) अंतिम पंक्ति से लेकर सब पंक्तियों में अधिक पाये जाते हैं । उन अधिक निषेकों में द्विचरम गुणहानि के अंतिम निषेक समान निषेक जुदे स्थापनेपर और वहां द्विचरम गुणहानि के बढ़ते हुये चय जुदे स्थापनेपर अंतिम गुणहानि से दोगुणा प्रमाणवाली दोनों पंक्ति ऐसी होती हैं -

९	१२	१९	०
९	१२	१२	२१९
९	१२	१३	२१३
९	१२	१४	२१६
९	१२	१५	२१९०
९	१२	१६	२१९५
९	१२	१७	२१२९
९	१२	१८	२१२८

इनके जोड़ अंतिम गुणहानि की दोनों

पंक्तियों के जोड़ से दोगुणे ऐसे होते हैं - प्रथम पंक्ति जोड़ द्वितीय पंक्ति जोड़

$$२ \mid \frac{9}{2} \mid \frac{9}{9} \mid \frac{9}{9}$$

$$२ \mid \frac{9}{3} \mid \frac{9}{2} \mid \frac{9}{9}$$

इन दोनों को पूर्वोक्त प्रकार जोड़नेपर अंतिम गुणहानि के आदिधन से दोगुणा इस उपांत गुणहानि का आदिधन ऐसा हुआ $\frac{9}{6} \mid \frac{3}{18} \mid १२$ । पुनश्च अंतिम गुणहानि की आदिपंक्ति का जोड़ ऐसा १०० उसका सर्व पंक्तियों में सद्भाव जानकर आठ से गुणित करनेपर उपांत गुणहानि में उत्तरधन ऐसा १००१८ होता है ।

पुनश्च उसके नीचे आठ पंक्तिरूप त्रिचरम गुणहानि वहां द्विचरम गुणहानि की आदिपंक्ति के सर्व निषेक तो सर्व पंक्तियों में पाये जाते हैं । अंतिम पंक्ति से लेकर सभी पंक्तियों में द्विचरम गुणहानि के निषेकों से दोगुणा प्रमाणवाले एक, दो आदि अधिक निषेक पाये जाते हैं, इसलिये वहां आदिधन द्विचरम गुणहानि के आदिधन से दोगुणा और उत्तरधन उपांत गुणहानि की आदि पंक्ति के निषेकों के जोड़ से आठ गुणा ऐसा जानना ३००।८ । ऐसे ही चतुश्चरमादि गुणहानियों में आदिधन दोगुणा दोगुणा और उत्तरधन अपनी अंतिम पंक्ति से ऊपर की पंक्ति के जोड़ से आठगुणा ऐसे जानना।

नाम	आदिधन	उत्तरधन
अंतिम गुणहानि	$\frac{9}{८।८।८।८।९}$	०
पंचम गुणहानि	$\frac{9}{८।८।८।८।२}$	१००।८
चतुर्थ गुणहानि	$\frac{9}{८।८।८।८।४}$	३००।८
तृतीय गुणहानि	$\frac{9}{८।८।८।८।८}$	७००।८
द्वितीय गुणहानि	$\frac{9}{८।८।८।८।१६}$	१५००।८
प्रथम गुणहानि	$\frac{9}{८।८।८।८।३२}$	३१००।८

यहां सर्व गुणहानियों के आदिधन को जोड़ते हैं । वहां अंतधन ऐसा $\frac{9}{८।८।८।८।३२}$ उसको गुणकार दो से गुणा करनेपर ऐसा $\frac{9}{८।८।८।८।६४}$ उसमें से आदि ऐसा $\frac{9}{८।८।८।८।९}$ घटानेपर सर्व गुणहानियों के आदिधन का जोड़ ऐसा $\frac{9}{८।८।८।८।६३}$ हुआ ।

पुनश्च उत्तरधन में सर्वत्र द्विचरम गुणहानि का उत्तरधन ऐसा १००।८ उस प्रमाण

ऋण सर्व जगह मिलानेपर ऐसा

१००।८
२००।८
४००।८
८००।८
१६००।८
३२००।८

हुआ । यहां अंतधन ऐसा ३२००।८

उसको गुणकार दो से गुणा करनेपर ऐसा ६४००।८ इसमें से आदि ऐसा १००।८ घटानेपर उत्तरधन ऐसा ६३००।८ हुआ । पुनश्च इस उत्तरधन में मिलाया हुआ ऋण ऐसा १००।८, उसको नानागुणहानिप्रमाण छह जगह मिलाया इसलिये उसका जोड़ नानागुणहानि गुणित द्विचरम गुणहानि के उत्तरधनमात्र ऐसा १००।८।६ हुआ । इसप्रकार

ये तीनों राशियां ऐसी हुयी -

आदिधन	उत्तरधन	ऋण
$\frac{9}{81} \frac{2}{121} \frac{18}{18} 163$	६३००।८	१००।८।६

यहां समयप्रबद्ध शलाका लाने के लिये त्रिसठ सौ का भाग देकर अपवर्तन करनेपर

ये तीनों राशियां ऐसी हुयी -

आदिधन	उत्तरधन	ऋण
$\frac{9}{81} \frac{2}{121} \frac{18}{18} 163$ १००।६	स७।८	स७।८।६ ६३

यहां आदिधन के भागहार में सौ का भागहार था, वहां संभेदन द्वारा एक अधिक तीनगुणा गुणहानि के आगे चार का गुणकार करते हैं ।

[विशेषार्थ - १०० के बदले $24 \times 8 = [(8 \times 3) + 9 \times 8] = \frac{9}{81} 1318$]

पुनश्च इस चार के आगे छह का गुणकार था उसको गुणा करनेपर तीन गुणहानि हुयी $[8 \times 6 = 24 = 8 \times 3]$ उसे लिखते हैं $\frac{9}{81} 1213$ और गुणकार भागहार में गुणहानि

का अपवर्तन करनेपर आदिधन ऐसा हुआ $\frac{9}{81} \frac{2}{121} \frac{18}{18}$ । पुनश्च यहां ऐसे ८ गुणकार $\frac{9}{81} 1313$

के ऊपर एक अधिक था उसके प्रमाण को जुदा बाद में स्थापते हैं और अवशेष को जुदा पहले स्थापते हैं तब दोनों राशियां ऐसी हुयी -

आदिधन	आदिधन का धन
$\begin{array}{r} २ \\ \text{स०} \overline{८१४।८} \\ ९ \\ \hline ८१३।३ \end{array}$	$\begin{array}{r} २ \\ \text{स०} \overline{८१४} \\ ९ \\ \hline ८१३।३ \end{array}$

पुनश्च इन दोनों राशियों में ऐसे ८१४ गुणकार के ऊपर दो अधिक हैं उनके प्रमाण को नीचे स्थापकर, अवशेष को ऊपर स्थापनेपर ऐसे होते हैं -

आदिधन	आदिधन का धन
$\begin{array}{r} \text{स०} \overline{८१४।८} \\ ९ \\ \hline ८१३।३ \end{array}$	$\begin{array}{r} \text{स०} \overline{८१४} \\ ९ \\ \hline ८१३।३ \end{array}$
पहले द्विक का धन	दूसरे द्विक का धन
$\begin{array}{r} \text{स०} \overline{१२।८} \\ ९ \\ \hline ८१३।३ \end{array}$	$\begin{array}{r} \text{स०} \overline{१२} \\ ९ \\ \hline ८१३।३ \end{array}$

यहां पहले द्विक के धन को ऊपर और नीचे तीन से गुणा करनेपर ऐसा $\begin{array}{r} \text{स०} \overline{६।८} \\ ९ \\ \hline ८१३।३ \end{array}$

इसके छह रूप में से चार रूप ऐसे $\begin{array}{r} \text{स०} \overline{४।८} \\ ९ \\ \hline ८१३।३ \end{array}$ उनको ऊपर के आदिधन में मिलाना

सो आदिधन को ऊपर नीचे तीन से गुणा करनेपर ऐसा $\begin{array}{r} \text{स०} \overline{८१३।४।८} \\ ९ \\ \hline ८१३।३ \end{array}$ । इसके और

उसके अन्य समान देखकर ऐसे ८१३ गुणकार के ऊपर एक अधिक करते हैं तब

ऐसा $\begin{array}{r} ९ \\ \text{स०} \overline{८१३।४।८} \\ ९ \\ \hline ८१३।३ \end{array}$ यहां ऐसे $\begin{array}{r} ९ \\ \overline{८१३} \end{array}$ का अपवर्तन करनेपर और भागहार के दो बार

तीन को परस्पर गुणा करनेपर आदिधन ऐसा $\begin{array}{r} \text{स०} \overline{४।८} \\ ९ \end{array}$ होता है । पुनश्च दूसरे द्विक

के धन को ऊपर नीचे तीन से गुणा करनेपर ऐसा $\begin{array}{r} \text{स०} \overline{६} \\ ९ \\ \hline ८१३।३ \end{array}$ । यहां छह रूपों में

चार रूप ऐसे $\frac{स० १४}{९ \overline{८३१३१३}}$ उसको तीन से ऊपर नीचे गुणा किया हुआ आदिधन का

धन ऐसा $\frac{स० ८१३१४}{९ \overline{८३१३१३}}$ उसमें जोड़ना । अन्य सर्व समान देखकर तीनगुणा गुणहानि

ऐसी $\overline{८३१}$ उसके ऊपर एक अधिक करनेपर ऐसा $\frac{स० ८१३१४}{९ \overline{८३१३१३}}$ होता है । यहां एक

अधिक तीनगुणा गुणहानि का अपवर्तन करते हैं और भागहार के दो बार जो तीन के अंक उनको परस्पर गुणा करते हैं तब आदिधन का धन ऐसा हुआ $\frac{स० १४}{९}$ ।

पहले द्विक के धन में अवशेष रहे दो रूप ऐसे $\frac{स० १२१८}{९ \overline{८३१९}}$ इसमें दूसरे द्विक के अवशेष

रहे दो रूप ऐसे $\frac{स० १२}{९ \overline{८३१९}}$ मिलाने के लिये किंचित् अधिक की संदृष्टि करनेपर ऐसा

$\frac{स० १८}{९ \overline{८३१९}}$ इसको आदिधन का धन ऐसा $\frac{स० १४}{९}$ उसमें जोड़कर अपवर्तन करनेपर किंचित्

कम आधा समयप्रबद्ध ऐसा $\frac{स० १९}{२}$ हुआ इसको ऋणराशि ऐसी $\frac{स० ८१६}{६३}$ सो यह

संख्यात वर्गशलाकामात्र समयप्रबद्धप्रमाण है उसमें घटाने की किंचित् कम की आगे संदृष्टि करनेपर ऋणराशि ऐसी $\frac{स० १९}{२}$ हुयी । पुनश्च पूर्वोक्त आदिधन ऐसा $\frac{स० १४}{९}$ रहा, उसको

उत्तरधन $\frac{स० १८}{९}$ में जोड़ते हैं । सो उत्तरधन को समच्छेद करनेपर ऐसा $\frac{स० १९१८}{९}$, सो

इसके और उसके अन्य समानता देखकर उसके चार रूपों में इसके नौ रूप जोड़नेपर ऐसा $\frac{स० ८१९३}{९}$ हुआ । यहां संदृष्टि के लिये गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध का अठारहवां

भाग ऐसा $\frac{स० १८}{९८}$ ऋण मिलाना । सो उस राशि को दो से ऊपर नीचे गुणा करनेपर

ऐसा $\frac{स० ८१२६}{९८}$ । इसके और मिलाने योग्य ऋण के अन्य समान देखकर आगे के

छब्बीस के गुणकार में एक जोड़नेपर ऐसा हुआ $\frac{स० ८१२७}{९८}$ यहां नौ से अपवर्तन करनेपर

डेढ़ गुणहानि गुणित समप्रबद्ध ऐसा $स७।८।३$ हुआ । इसमें प्रथम ऋण किंचित् कम संख्यात वर्गशलाका गुणित समयप्रबद्धमात्र उससे अधिक गुणहानि गुणित समयप्रबद्ध का अठारहवां भागमात्र द्वितीय ऋण घटाने के लिये डेढ़ गुणहानि के गुणकार में किंचित् कम की संदृष्टि करनेपर; और डेढ़ से गुणित आठ का प्रमाण बारह करनेपर किंचित् कम डेढ़ गुणहानि गुणित समयप्रबद्धमात्र सत्त्व ऐसा $स७१२-$ होता है ।

अब अनुलोम विलोम अपेक्षा त्रिकोणयंत्र का जोड़ कहते हैं -

वहां त्रिकोण रचना में प्रथम गुणहानि का प्रथम निषेक एक पाया जाता है $५१२।१$, दूसरे निषेक दो हैं $४८०।२$, तीसरे निषेक तीन हैं $४४८।३$ । ऐसे ही एक एक अधिक क्रम से अंतिम निषेक गुणहानिमात्र $२८८।८$ पाये जाते हैं । यह प्रथम पंक्ति हुयी ।

पुनश्च दूसरी गुणहानि के प्रथम निषेक एक अधिक एक गुणहानिमात्र हैं $२५६।१$, दूसरे निषेक दो अधिक गुणहानिमात्र हैं $२४०।२$ ऐसे ही एक एक अधिक होते हैं। अंतिम निषेक दोगुणा गुणहानिमात्र हैं $१४४।८।२$ यह दूसरी पंक्ति हुयी । इससे एक एक अधिक ऐसे तृतीय पंक्ति में निषेक होते हैं। ऐसे ही चतुर्थादि पंक्ति जाननी। जितनेवां निषेक हो उतने प्रमाण वे निषेक जानना । उनकी रचना -

$२८८।८$	$१४४।\frac{८}{२}$	$७२।\frac{८}{४}$	$३६।\frac{८}{८}$	$१८।\frac{८}{१६}$	$९।\frac{८}{३२}$
$३२०।७$	$१६०।\frac{७}{२}$	$८०।\frac{७}{४}$	$४०।\frac{७}{८}$	$२०।\frac{७}{१६}$	$१०।\frac{७}{३२}$
$३५२।६$	$१७६।\frac{६}{२}$	$८८।\frac{६}{४}$	$४४।\frac{६}{८}$	$२२।\frac{६}{१६}$	$११।\frac{६}{३२}$
$३८४।५$	$१९२।\frac{५}{२}$	$९६।\frac{५}{४}$	$४८।\frac{५}{८}$	$२४।\frac{५}{१६}$	$१२।\frac{५}{३२}$
$४१६।४$	$२०८।\frac{४}{२}$	$१०४।\frac{४}{४}$	$५२।\frac{४}{८}$	$२६।\frac{४}{१६}$	$१३।\frac{४}{३२}$
$४४८।३$	$२२४।\frac{३}{२}$	$११२।\frac{३}{४}$	$५६।\frac{३}{८}$	$२८।\frac{३}{१६}$	$१४।\frac{३}{३२}$
$४८०।२$	$२४०।\frac{२}{२}$	$१२०।\frac{२}{४}$	$६०।\frac{२}{८}$	$३०।\frac{२}{१६}$	$१५।\frac{२}{३२}$
$५१२।१$	$२५६।\frac{१}{२}$	$१२८।\frac{१}{४}$	$६४।\frac{१}{८}$	$३२।\frac{१}{१६}$	$१६।\frac{१}{३२}$

यहां प्रथम पंक्ति में [नीचे की] जो निषेक कहे उनमें द्वितीय गुणहानि का प्रथम निषेक ऐसा २५६ उससे अधिक जितने जितने अपने चय ऐसे ३२ पाये जाते हैं, उनको जुदे ऐसे लिखते हैं -

	विशेषार्थ
३२।१।८	$५११ \times १ = २५६ \times १ + ३२ \times ८ \times १$
३२।२।७	$४८० \times २ = २५६ \times २ + ३२ \times ७ \times २$
३२।३।६	$४४८ \times ३ = २५६ \times ३ + ३२ \times ६ \times ३$
३२।४।५	$४१६ \times ४ = २५६ \times ४ + ३२ \times ५ \times ४$
३२।५।४	$३८४ \times ५ = २५६ \times ५ + ३२ \times ४ \times ५$
३२।६।३	$३५२ \times ६ = २५६ \times ६ + ३२ \times ३ \times ६$
३२।७।२	$३२० \times ७ = २५६ \times ७ + ३२ \times २ \times ७$
३२।८।१	$२८८ \times ८ = २५६ \times ८ + ३२ \times १ \times ८$

यहां नीचे पांच सौ बारह के निषेक में दो सौ छप्पन के निषेक से बत्तीस प्रमाणवाले अपने आठ चय अधिक हैं और वह निषेक एक ही है इसलिये एक गुणे आठ चय लिखे । उसके ऊपर चार सौ अस्सी के निषेक में सात चय अधिक हैं और वे निषेक दो हैं इसलिये दो गुणा सात चय लिखे । उसके ऊपर चार सौ अड़तालीस के निषेक में छह चय बढ़ते हैं और वे निषेक तीन हैं इसलिये तीनगुणे छह चय लिखे, ऐसे ही ऊपर भी रचना जाननी । पुनश्च चय के आगे गुणकार है उनको परस्पर गुणा करनेपर ऐसा होता है -

३२।८
३२।१४
३२।१८
३२।२०
३२।२०
३२।१८
३२।१४
३२।८

पुनश्च इनको हीन अधिक करके स्थापनेपर एक चय गच्छ जो गुणहानिमात्र